विरोध

अभी समाप्त नहीं हुआ है

मार्टिन लूथर के 500 वर्ष बाद

विरोध
अभी समाप्त नहीं हुआ है!

मार्टिन लूथर के 500 वर्ष बाद

मार्टिन लूथर ने विटिनबर्ग में 95 सूत्रों वाला पर्चा जब चर्च के दरवाज़े पर कीलों से ठोंका था तब से 31 अक्टूबर 2017 को 500 वर्ष का समय पूरा हुआ. इन 95 सूत्रों ने रोमन कैथोलिक चर्च की उन शिक्षाओं और परम्पराओं को बेनक़ाब कर दिया जो बाइबल के विरुद्ध हैं. लोग आश्चर्यकित थे कि एक अकेला आदमी इतना बड़ा काम करने की हिम्मत कैसे कर सकता था! कल्पना कीजिए कि एक आदमी रोम के विरुद्ध – एक आदमी पूरे तंत्र के विरुद्ध बोलने का साहस करता है.

ये 95 सूत्र पूरी जर्मनी और दुनिया में थोड़े ही समय में फैल गए. लोग जल्दी ही समझ गए कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ऐसी शिक्षाएं और परम्पराएं स्थापित कर रही है जो बाइबल की शिक्षाओं के विरुद्ध हैं और वे मार्टिन लूथर के पक्ष में खड़े होने लगे. बहुत वाद-विवाद हुआ जिसके कारण इन 95 सूत्रों ने लोगों को एक अलग तरीके से सोचने पर विवश किया.

केवल पुरोहित लोगों के पास ही बाइबल होती थी और लोग केवल उन्हीं से सीखने की उम्मीद रखते थे. परमेश्वर के वचन की सही व्याख्या करने के लिए केवल पुरोहितों पर भरोसा किया जाता था. मार्टिन लूथर ने इन 95 सूत्रों और प्रचार के द्वारा रोमन कैथोलिक कलीसिया की उन शिक्षाओं और परम्पराओं को बेनक़ाब किया जो बाइबल की शिक्षाओं के विरुद्ध हैं. जल्द ही दो अलग-अलग समूह तैयार हो गए – कैथोलिक कलीसिया बनाम लूथर की शिक्षाएं. चूँकि लूथर अपनी खोज और अपनी शिक्षाओं को बहुत मज़बूती से पकड़े रहा इसलिए उसे वॉर्म की सभा के सामने हाज़िर होने का आदेश दिया गया. सभा यह चाहती थी कि मार्टिन लूथर ने जो कुछ कहा और लिखा था उससे मुकर कर वह रोमन कैथोलिक कलीसिया की शिक्षाओं से सहमत हो जाए. लूथर ने कहा: **प्रेरितों और नबियों के लेखों से यह साबित करो कि मैंने ग़लती की है. जैसे ही मैं क़ायल हो जाऊँगा, मैं अपनी राय बदल लूँगा और सबसे पहले मैं ख़ुद ही अपनी किताबों**

को उठाकर आग में झोंक दूँगा.'' उसने आगे कहा, **''मैं अपने विश्वास को न तो पोप के सामने समर्पित कर सकता हूँ और न ही किसी सभा के सामने, क्योंकि यह अच्छी तरह से स्पष्ट है कि प्राय: इन दोनों ने एक दूसरेक ाि वरोधिं कयाहै .ज बत कम ुझे वचन की स्पष्ट शिक्षा या विवेक में सफाई से यह स्पष्ट नहीं हो जाता है, जब तक मैंने जो कुछि लखाहै उ सकेद्व ाराय हम ानन हीं लेता, और जब तक वे मेरे विवेक को जो परमेश्वर के वचन से बंधा हुआ है, क़ायल नहीं कर देते, मैं अपनी बात से नहीं मुकर सकता और न ही मुकरूँगा, क्योंकि एक मसीही के लिए उसके अपने विवेक के ख़िलाफ बोलना सुरक्षित नहीं है. मैं इसी बात पर क़ायम हूँ, मैं इससे पीछे नहीं हट सकता, परमेश्वर मेरी मदद करे.''** (डी, ॲबीग्रे, 7वीं किताब, अध्याय 8).

ॲबीग्रे, 13वीं किताब अध्याय 6).

×âèãè â×‹ Ì æ mæÚæ çßÚæŠæ

राजा चार्ल्स पंचम लूथर और उसके सुधार कार्य को रोकना चाहता था. पोप के लोगों को ख़ुश करने के लिए उसने 1529 में स्पायर की सभा बुलाई. सभा में यह निर्णय लिया गया की धर्म सुधारकों की शिक्षाओं को और अधिक फैलने से रोका जाए. इसके अलावा यह भी तय किया गया कि सुधारकों को जन-भावनाओं से न तो टकराना और न ही उनका विरोध करनाच ाहिए.अ ौरए कभ ीकै थोलिकइ ंसानक ो लूथर की शिक्षाओं को स्वीकार करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

कुछ मसीही सामन्त जो इस धर्म सुधार के पक्ष में थे, उन्होंने राष्ट्रीय सभा के सामने अपने विरोध को ज़ाहिर करने का निर्णय लिया. उन्होंने लिखा, दूसरी बातों के बीच में, **''हम प्रस्तावित आदेश से न तो सहमत हैं और न ही इसका पक्ष लेंगे जो किसी भी बात में परमेश्वर, उसके वचन, हमारे उचित विवेक, हमारी आत्माओं के उद्धार के विरोध में हो... हमने निर्णय लिया है कि परमेश्वर के अनुग्रह से केवल उसके पवित्र वचन की शिक्षाओं को मानेंगे और बाइबल के नये और पुराने नियम की किताबों में इसके विरुद्ध कुछ भी नहीं बढ़ायेंगे.''** (डी, ॲबीग्रे, 13वीं किताब अध्याय 6).

इन लोगों के विरोध ने सुधरी हुई कलीसिया को 'प्रोटेस्टेन्ट' -विरोध' नाम दिया; इसके सिद्धान्त ही सुधारवादी आन्दोलन का सार हैं.

ç•¤â ¥çŠæ•¤æÚ â?

मार्टिन लूथर और अन्य सुधारकों का यह विचार था कि जब विश्वास और शिक्षाओं की बात होती है तो मसीही भाई-बहनों को केवल और केवल बाइबल का ही पालन करना चाहिए. दूसरी ओर कैथोलिक कलीसिया का यह मानना था कि इन्सान को बाइबल **के साथ-साथ** परम्पराओं को भी मानना चाहिये. इस बिन्दु पर स्पष्ट दरार दिखाई दे रही थी.

कैथोलिक कलीसिया ने यह कहा कि लूथर और सुधारकों को कलीसिया और सरकार के निर्णय को स्वीकार करना चाहिए. सुधारकों ने यह कहा कि वे उनके निर्णय को उसी स्थिति में स्वीकार करेंगे जब वह निर्णय परमेश्वर के वचन के ख़िलाफ न हो. सुधारकों का यह मानना था कि उनको यह अधिकार थाि कि वश्वासअ ौरि शक्षाओंके स ंबन्धम ेंउ न्हें अपने विवेक की बात सुननी चाहिए. दूसरी ओर रोम का मानना यह था कि जब कलीसिया की सभा में बहुमत ने कोई फैसला किया है तो सभी को उस फैसले को स्वीकार करना चाहिए. इस प्रकार से प्रत्येक जन को स्वयं ही यह फैसला करना था कि वह: केवल परमेश्वर के वचन को स्वीकार करेगा, या फिर बाइबल के साथ-साथ कलीसिया की शिक्षाओं

(परंपराओं) को भी स्वीकार करेगा.

âìæß

चूँकि सुधारवादी लोग रोम के सामने नहीं झुके इसलिए रोमन कैथोलिक कलीसिया ने उन्हें सताना शुरू कर दिया. सुधारक लोग रोम की कलीसिया के अधिकारों के खिलाफ अडिग खड़े हो गये थे इसलिए अब उन्हें समाप्त करने की योजनाएं बनने लगीं. इतिहास की पुरानी किताबें जो आजकल बहुत ही कम देखने को मिलती हैं, वे हमें उस भयानक सताव के बारे में बताती हैं. बहुत से धर्म सुधारकों को अमानवीय रीति से बंदी बना लिया गया, दूसरे लोग एकान्त स्थानों में सताये गये, बहुत से लोग जंगली जानवरों के सामने डाल दिये गये, बहुत से लोग जाँच-पड़ताल के द्वारा सताये गये, जबकि दूसरे असंख्य लोग तलवार से मार डाले गये. कैथोलिक कलीसिया द्वारा भयंकर सताव और दण्ड की कहानियों ने लूथर से पहले और बाद में संसार को झकझोर कर रख दिया. बहुत सारे सुधारकों को धमकियाँ मिलीं और पोप द्वारा उनके ऊपर प्रतिबंध लगा दिया गया. जब पोप के द्वारा किसी के ऊपर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता था तब कोई भी इंसान उन प्रतिबंधित लोगों को मार सकता था. बहुत से धर्मसुधारक जैसे -हायरोनिमस, जॉन हस्स, लूइस डी. बरकूइन, विलियम टिनडेल और बहुत सारे सुधारकों को खूँटे से बांध कर जला दिया गया. जॉन वायक्लिफ की लाश को भूमि में से खोदकर बाहर निकाला गया और उसकी हड्डियों को जलाकर उसकी राख को पास की नदी में फेंक दिया. सिर्फ अकेले इंग्लैंड के अंदर कैथोलिक महारानी मेरी के शासन काल 1555-1558 के दौरान 289 प्रोटेस्टेन्ट्स लोगों को खूँटे से बांध कर जला दिया गया.

इसि वषयम ेंय ाशिुन ेज ाेक हाथ ाउ सप र६ यान दीजिए, **''जो तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया''** (मत्ती 25:40). कैथोलिक कलीसिया और उनके अगुओं को बहुत सी बातों के लिए जवाब देना होगा! भाग्यवश यह परमेश्वर ही है जो इन सब बातों का हिसाब लेगा. वह सब कुछ देखता है, और वह धार्मिकता से न्याय करेगा. यदि इस बात को इस वचन से जोड़ कर देखा जाए तो लाभदायक होगा, **''क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा''** (सभोपदेशक 12:14).

यह साफ है कि यदि कोई अपने पापों को स्वीकार करे और उनके लिए क्षमा माँगे तो सभी पाप क्षमा हो सकते हैं, लेकिन हमने कभी यह नहीं पढ़ा और न सुना कि कैथोलिक कलीसिया ने सलीब के सामने जाकर लूथर के समय और उसके बाद दूसरे विश्वास केल ोगोंक ाेभ यंकरस ताव,त ाड़नाद ेनेअ ौरम ार डालने के लिए कभी अपने पापों को स्वीकार किया और पश्चाताप करके क्षमा माँगी हो.

विचार करें, कैथोलिक कलीसिया ने लोगों को सिर्फ इसलिए जलाने की आज्ञा दी क्योंकि उनका विश्वास उनसे अलग था? इस बारे में सोचें कि (इंक्यूजीशन) विधर्मियों का दमन करने के समय में लोगों को केवल इसलिए भंयकर सताव का सामना करना पड़ा क्योंकि उनका विश्वास उनसे अलग था? उनके बारे में सोचें जो लोग तलवार से सिर्फ इसलिए मारे गए क्योंकि उनका विश्वास दूसरों से भिन्न था? इस बारे में सोचें कि लोगों को अपने समाज से सिर्फ इसलिए निकाल दिया गया, क्योंकि उनका विश्वास उनसे अलग था. और यह गिनती आगे बढ़ती ही जाएगी. जबकि इस चर्च संगठन को मसीही माना जाता है. क्या मसीह का इस तरह के व्यवहार से कोई संबन्ध हो सकता है? नहीं, कभी नहीं.

इस तरह के भयानक सताव के पीछे शैतान और केवल शैतान का ही हाथ हो सकता है. यह भयंकर सताव सिर्फ एक दिन, एक महीने या एक साल के लिए ही नहीं चला, परन्तु कई सौ वर्षों तक चलता रहा. यह भी देखने लायक बात है, भूतपूर्व पोप बैनेडिक्ट 16वें, 2005 तक इन्क्यूजीशन (विधर्मियों का दमन करने वाला संघ) के अगुवा रहे हैं. आज इनक्यूजीशन को नया नाम- 'काँग्रीगेशन ऑव द डॉक्ट्रिन ऑव द फेथ' कर दिया गया है. द काँग्रीगेशन के वर्तमान लीडर ऑर्कबिशप जेरहार्ड लुडविग म्यूलर हैं.

सुधारकों ने परमेश्वर के काम के लिए अपना सब कुछ अपर्ण कर दिया. जलते वक्त भी उन्होंने यीशु की

गवाही दी. हम लोगों का क्या है: क्या हमें एहसास है कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया है? क्या हमें उसके उस महान प्रेम और अनुग्रह का एहसास है जो हमारे लिए दिया गया है? क्या हम परमेश्वर के लिए अपना सब कुछ अपर्ण करने के लिए तैयार हैं?

¥ÂÙàæ˜æ¥æâÂ× ·¤Úæ

अगर हम यीशु की तुलना पोप से करें, जिसने लोगों को केवल इसलिए मरवा डाला क्योंकि वे दूसरे विश्वास के थे, तब यीशु मसीह कहेगा: **''परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो.''** (मत्ती 5: 44). पोप के अधिकारों में कितनी अलग भावना दिखाई देती है! परमेश्वर ने हमें चुनाव करने की स्वतंत्रता के साथ बनाया है कि हम धार्मिक बातों में अपने विवेक के अनुसार चुनाव कर सकें. हमें लोगों को जैसा मैं विश्वास करता हूँ या जैसा आप विश्वास करते हैं, वैसा करने के लिए विवश नहीं करना चाहिए.

सभी को यह अधिकार होना चाहिए कि वे परमेश्वर की आराधना अपने विवेक के अनुसार कर सकें. अपनी बात मनवाने के लिए क़ैद करना, यातना देना और तलवार से मार डालना ग़लत है. अपने दुश्मनों को मारना और उनको प्यार करना, दोनों बातों में बहुत फ़र्क है. परमेश्वर के लोग अपने दुश्मनों से भी प्यार करेंगे. हमें बनाने वाला और हमें ज़िंदा रखने वाला यीशु मसीह सबसे प्यार करता है (यूहन्ना 1:3; कुलुस्सियों 1:17). यीशु कहता है: ***''हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा''*** (मत्ती 11:28). वह यह भी कहता है: ***''जो कुछ पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूंगा''*** (यूहन्ना 6:37). यीशु की इच्छा है कि हम सब सत्य को समझें और उद्धार पाएँ.

€Øæ ÂæÂ Øèàæ ·¤æ Âç Ì çÙçŠæ ã?

पोपअ पनेअ ापक ोप ृथ्वीप रय ोशुक ाप ्रतिनिधि मानते हैं, लेकिन सब को यह समझना चाहिए कि पोप यीशु के प्रतिनिधि नहीं हैं. पोप अपने आप को झूठी शान और दिखावे में घेर कर रखते हैं, लेकिन यीशु ने कहा: ***''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है.''*** (मत्ती 8:20). यीशु बिल्कुल साधारण कपड़े पहनते थे, जबकि पोप के पास बहुत ही मंहगे कपड़े होते हैं. पोप लोग विलासता के बड़े महलों में रहते हैं, यात्राओं पर करोड़ोंरु पयाख ्र्चक रतेह ैं,अ ौरअ पनेअ ापक ो सुरक्षाग ार्डोंस ेघ ोरेर हतेह ैं.ह मस ाफ-साफद ेख सकते हैं कि पोप के मूल्य और यीशु के मूल्य एक समान नहीं हैं. इस प्रकार से कैथोलिक कलीसिया ने पोप को जो शीर्षक दिया है, वह उन पर बिल्कुल शोभा नहीं देता है. यह तो यीशु के विनम्र और पवित्र जीवन का एक मज़ाक है.

कैथोलिक कलीसिया बहुत अधिक धनी है. यीशु ने धनी व्यक्ति से कहा था: ***''तुझ में एक बात की कमी है. जा, जो कुछ तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा. तब आकर मेरे पीछे हो ले.''*** (मरकुस 10:21).

चूँकि वेटिकन के पास बहुत धन है, इसलिए पोप को जो दीन उद्धारकर्ता का प्रतिनिधि होने का दावा करता है, उसे भी मसीह के इस निवेदन को स्वीकार करना चाहिए.

मार्टिन लूथर कैथोलिक कलीसिया को अंदर से जानता था और उसने कहा: ***''उस व्यक्ति को राजाओं से भी बढ़कर शान-शौक़त में देखना एक भयानक बात है जो अपने आप को मसीह का प्रतिनिधि मानता है. क्या निर्धन यीशु या फिर विनम्र परतस ऐसे ही थे? वे लोग कहते हैं कि पोप तो दुनिया का प्रभु है. क्या एक प्रतिनिधि का साम्राज्य उससे भी विशाल हो सकता है जिसका प्रतिनिधि होने का वह दावा करता है?''*** *(डी, ॲबीग्रे, किताब 6, अध्याय 3).*

पोप पॉल 6वें ने *टुवर्ड ऐन इफैक्टिव वर्ल्ड अथॉरिटी* के एक अनुच्छेद में यह लिखा है: ***'' इस अंतराष्ट्रीय सहकारिता को पूरी दुनिया में स्थापित करने के लिए ऐसी संस्थाओं की ज़रूरत है, जो तब तक तैयारी, समन्वय और निर्देशन करें जब तक दुनिया में एक ऐसी न्याय व्यवस्था स्थापित न हो जाए जिसे पूरे विश्व की मान्यता प्राप्त हो. न्याय और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रभावशाली तरीके से कार्य करने में सक्षम एक प्रगतिशील विश्वव्यापी शक्ति की आवश्यकता कौन महसूस नहीं करता है?''*** -पोप पॉल 6ठवें, पोपोलोरम प्रोग्रेसियो 1967, पृष्ठ 78.

फिर एक सवाल उठता है: कैथोलिक कलीसिया नयी विश्व शासन पद्धत्ति को स्थापित करने के लिए कौन-कौन सी संस्थाओं के साथ कार्य कर रही है? मुझे लगता है कि हम इनको यूनाइटेड नेशन्स, यूरोपियन यूनियन, नाटो, अफ्रीकन यूनियन, इन्टरनेशनल मॉनिटरी फन्ड और ऐसी बहुत सी अनेक संस्थाओं के रूप में पूरा होते हुए देख सकते हैं.

çßàß àæçQ¤

बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि कैथोलिक कलीसिया ने धर्मसुधार के समय भयानक सताव किया था लेकिन अब वह बदल गई है- किन्तु वह बदली नहीं है. आज भी उसकी शिक्षाएं और धर्मसिद्धान्त वही हैं जो हमेशा से रहे हैं. उसने तो मसीही चोगा इसलिए पहन लिया है कि लोग उसे स्वीकार कर लें. अब जबकि रोमन कैथोलिक कलीसिया को स्वीकार कर लिया गया है, उसे फिर वही पुरानी शक्ति हासिल हो गई है. न सिर्फ यूरोपियन यूनियन में बल्कि हम शीघ्र देखेंगे कि पूरी दुनिया में रोमन कैथोलिक की वास्तविकता क्या है. जैसे कि उसने धर्मसुधार के समय में दमन करने के लिए अपनीस रकारीश ाक्तियोंक ाप्रयोगि कयाथ ा,व ह अपनी खोई हुई शक्ति को पुन: पाने के लिए सरकारी और अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का सहारा लेगी.

भूतपर्व पोप बेनेडिक्ट 16वें ने विश्व के नेताओं से एक निर्णायक अपील करते हुए अपने नवीनतम वक्तव्य में कहा है: ***''विश्व का वर्तमान आर्थिक संकट दूर करने के लिए, विश्व की अर्थव्यवस्था को ईश्वर केन्द्रित नीतियों के तहत प्रबन्ध करने के लिए... एक सच्ची विश्व राजनीतिक शक्ति की नितान्त आवश्यकता है.''*** -कैथी लिन्न ग्रोस्समान, यू एस ए टुडे, 7.7.2009.

हमें यह बात नहीं भूलना चाहिए कि कैथोलिक कलीसिया एक विश्व शक्ति बनने की इच्छा रखती है. वह संसार पर नियंत्रण रखना चाहती है. कैथोलिक लोगों ने ही यूरोपियन यूनियन का आरम्भ किया और इस नई विश्व शासन पद्धत्ति के विचार के पीछे भी वैटिकन का हाथ है. नई विश्व शासन पद्धत्ति में अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों के द्वारा शासन किया जाएगा, और

इस प्रकार उन्हें शक्ति-विश्व शक्ति मिल जाएगी.

जेस्सूयूट प्रोफेसर और वेटिकन के अन्दर रह चुके मलाकी मार्टिन ने अपनी लोकप्रिय पुस्तक *द कीज़ टु दिस ब्लड*, में इन सब बातों का खुलासा किया है:

''**चाहे हम इच्छुक हों या न हों, तैयार हों या न हों, *हम सब तीन राहों वाली विश्व प्रतियोगिता में शामिल हैं. हम में से अधिकांश लोग प्रतियोगी नहीं हैं... हम दाँव पर लगे हैं... प्रतियोगिता इस बात को लेकर है कि पूरी दुनिया को स्वीकार्य विश्व में क़ायम होने वाली विश्व शासन पद्धत्ति की स्थापना कौन करेगा. इससे तय होगा कि यह दोहरी शक्ति -हम में से प्रत्येक के ऊपर व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक दशा में सामाजिक रूप से लागू होगी वह शक्ति किसके हाथ में होगी और कौन इसके अधीन होगा... 21वीं सदी में... अब चूँकि आरम्भ हो चुकी है, इसके रुकने की कोई संभावना नहीं है...व्यक्तिगत और नागरिक रूप से हमारी जीवन पद्धत्ति...हमारी राष्ट्रीय पहचान... सभी कुछ हमेशा के लिए पूरी तरह से बदल जाएँगे. इसके प्रभाव से कोई नहीं बचेगा. हमारे जीवन का कोई भी पहलू इससे अछूता न रहेगा.***'' मलाकी मार्टिन, कीज़ टु दिस ब्लड: पोप जॉन पॉल द्वितीय नई विश्व शासन पद्धत्ति पर नियंत्रण के लिए रूस बनाम पश्चिम. (1991) पृष्ठ 12-16).

मलाकी मार्टिन का कहना है कि, ''इस प्रतियोगिता में पोप की जीत होगी.'' अपनी किताब के 31वें पृष्ठ पर मलाकी मार्टिन यह स्पष्ट करते हैं कि यह विश्व सरकार के ऊपर अन्तर्राष्ट्रीय नौकरशाहों द्वारा नियंत्रण किया जाएगा और यह सरकार प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक देश पर नियंत्रण रखकर उन्हें निर्देशित करेगी.

आइये कैथोलिक कलीसिया के कुछ एक कथनों पर नज़र डालें जो उसकी पहिचान को बेनक़ाब करते हैं:

''रोम की कलीसिया सभी साम्राज्यों के ऊपर एक एकाधिपत्य (राजाओं के ऊपर राजा) है, जैसे शरीर के ऊपर दिमाग़ या संसार में परमेश्वर. इसलिए रोम की कलीसिया के पास केवल धार्मिक अधिकार ही नहीं, बल्कि सांसारिक अधिकार भी होना चाहिए.'' (पोप लियो 12वाँ, अपॉस्टोलिक लेटर, 1897). पोप ग्रेगरी जॉर्ज ने इस मत को बार-बार दोहराते हुए कहा है, ***''कलीसिया की शक्ति, सरकार की शक्ति से बड़ी है.''*** धर्मविज्ञान व्यवस्था के प्रोफेसर डॉक्टर जी. एफ. वैन

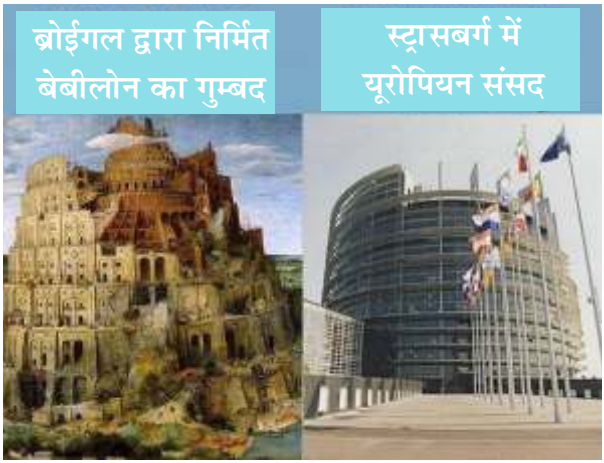

शुल्टे कहते हैं: ***''सभी मानवीय अधिकार शैतान की ओर से हैं, इसलिए वे सब पोप के अधीन होने चाहिए.''*** (टी.ड ब्ल्यू.कै लावे:र ोमिनिज़्मब नाम अमेरिकनिज़्म, पृष्ठ 120).

ये संदर्भ बड़ी स्पष्टता से बताते हैं कि यह राजनैतिक कलीसिया सरकारों और देशों को नियंत्रित करने की शक्ति प्राप्त करने का प्रयास कर रही है. रोमन कैथोलिक कलीसिया, ''डि जूरे डिविनो'' एक लैटिन वाक्यांश जिसका अर्थ है-कलीसिया के पास पूरे संसार की शक्तियों और लोगों पर शासन करने का पवित्र अधिकार है. रोमन कलीसिया यह दावा करती है कि उसे यह अधिकार स्वयं परमेश्वर ने दिया है

और यह कलीसिया हर हथकण्डा अपना कर इस लक्ष्य-संसार पर अधिकार हासिल करके ही रहेगी.

एक जानी मानी कैथोलिक हस्ती डॉक्टर ब्रोसोन ने एक बार लिखा: ***''धार्मिक व्यवस्था के हित में पोप जब चाहे किसी भी राजा को गद्दी से उतर जाने का आदेश देने का अधिकारर रखता है. मध्यकालीन समय में कलीसिया के द्वारा व्यवहार की गई शक्तियाँ अनाधिकार नहीं थीं, राजाओं की सहमति से हासिल नहीं की गईं थीं और न ही लोगों की सहमति से प्राप्त की गईं थीं, किन्तु वे स्वर्गीय अधिकार से प्राप्त हुई थीं और हमेशा रहेंगी, और जो कोई इन शक्तियों का विरोध करता है, वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के प्रति विद्रोह करता है.''*** (*कैथोलिक रिव्यू, जून 1851*).

हालाँकि यह बात बहुत पहले लिखी गई थी फिर भी रोम की कलीसिया यही कहती है कि वह कभी बदलती नहीं है. डॉक्टर ब्रोसोन ने इस बात को पक्का ठहराया है: ***''कलीसिया ने जो कुछ किया है, जो कुछ उसने व्यक्त किया है या अब तक गुप्त रूप से स्वीकृति दी है, यदि वैसी ही परिस्थितियाँ पैदा हो जाएं तो वह भविष्य में भी ठीक वैसा ही करेगी, कहेगी या गुप्त रूप से स्वीकृति देगी.''*** *कैथोलिक रिव्यू, जनवरी 1854*).

हम देखेंगे कि इन अन्तिम दिनों में इस शक्ति का किसी तरह से विरोध, या कलीसिया के अधिकार को स्वीकार न करने वालों को यूरोपियन यूनियन के द्वारा भी दण्डित किया जाएगा.

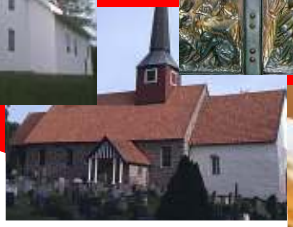

दूसरी वैटिकन कांउसिल (1962-1965) तक कैथोलिक कलीसिया दूसरे धर्म वाले लोगों को 'विधर्मी' कहती थी. इस कांउसिल के बाद से, विधर्मियों को अब अलग हो चुके भाई कहा जाने लगा है. कैथोलिक कलीसिया कहती है कि केवल उसी के पास सत्य है और उनकी कलीसिया के बाहर किसी का उद्धार संभव नहीं है.

§€Ø×Ùè·¤Ü (¿¿ °·¤Ì) ¥æ‹ÎæÜÙ

आज कैथोलिक कलीसिया सभी कलीसियाओं को 'इक्यूमेनीकल' एकता आन्दोलन के द्वारा जोड़ने का प्रयास कर रही है. उन्होंने रोम के जेस्यूट्स से कहा है कि वे कलीसियाओं को कैथोलिक कलीसिया के झण्डे के नीचे लाने के लिए संवाद स्थापित करें. हम देखस कतेहैं कि कब दलावअ ार हाहै.कैथोलिक कलीसिया में कोई बदलाव नहीं आया है किन्तु प्रोटेस्टेन्ट्स लोग रोम कैथोलिक कलीसिया के अधिक निकट आने लगे हैं.

इक्यूमेनीकल एकता आन्दोलन में प्रयोग होने वाले अपेक्षित दस्तावेज़ का नाम *चार्टा ओक्यूमेनीका* रखा गया है और इस दस्तावेज़ से यह स्पष्ट है कि वे एक साथ मिलकर मिशनरी कार्य करने की इच्छा रखते हैं. वे जिन बातों पर सहमत हैं उन पर वे एकता दिखा रहे हैं और जिन बातों पर वे एकमत नहीं हैं, उन्हें अलग रखा गया है. यीशु मसीह चाहता है कि हम सब सभी बातों में उसके साथ एकत

ा दिखाएँ. बहुमत और लोकतंत्र के आधार पर एकता नहीं, किन्तु मसीह में एकता होनी चाहिए. मसीही विश्वास में प्रत्येक स्तर पर एकता. यदि हम कलीसिया की सभा के साथ एकमत नहीं हो सकते हैं, तब हमें मसीह का अनुसरण करना चाहिए.

जो लोग लोग कलीसिया से अलग होकर मिशनरी कार्य करते हैं, उन्हें कपटी या विश्वासघाती के रूप में देखा जाता है- और विश्वासघाती लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया जाएगा. मार्टिन लूथर, मेलांक्टन, टिंडल, कैल्विन, वाइक्लिफ, हिरोनिमुस, वैस्ली, हस्स, ज़्यिूग्ली, बरक्इन, वाल्डेनसिइंस जैसे लोगों को विश्वासघाती माना गया था. इन 'विश्वाघाती' लोगों की एक ही चाहत थी कि उनके विश्वास का आधार बाइबल और केवल बाइबल ही हो. जैसा कि हमने देखा है कि मध्यकालीन युग में कैथोलिक कलीसिया ने 'विश्वासघाती' (धर्मसुधारकों) को रोकने और समाप्त करने का दृढ़ निश्चय किया था. आज के धर्मसुधारकों को चर्च एकता आन्दोलन के विरोध में माना जाता है. आज का चर्च एकता आन्दोलन बाइबल और परम्पराओं को मानक मानता है, जबकि आज के सुधारक बाइबल और केवल बाइबल को ही अपने विश्वास का आधार मानकर लूथर और दूसरे धर्मसुधारकों के पद-चिन्हों पर चल रहे हैं.

बाइबल स्पष्टता से बताती है कि सताने वाली इस शक्ति को एक 'प्राणघातक घाव' लगेगा और वह घाव ठीक हो जाएगा. पोप के अधिकार को 1798 में प्राणघातक घाव लगा था जब पोप पाइस 6वें को नेपोलियन के सेनापति बर्थियर ने बंदी बना लिया और वह बाद में फ्रांस की जेल में मर गया था. 1929 में मुस्सोलिन ने पोप के अधिकार को स्वीकार करते हुए पुन: वैटिकन राज्य का दर्ज़ा दे दिया और तभी से इसने संसार में प्रभाव और शक्ति प्राप्त करना आरम्भ कर दिया है. पोप जॉन पॉल द्वितीय ने पूरे संसार में घूम-घूम कर एक के बाद दूसरे देश के साथ राजनायिक संबंधों को स्थापित किया. पोप बेनडिक्ट 16वें ने उसके कार्य को आगे बढ़ाया और नये जेस्यूट पोप फ्रासिंस संसार के सभी धर्मों के लोगों को चर्च एकता आन्दोलन के द्वारा उन लोगों को पोप के झण्डे के नीचे लाने के लिए संघर्षरत हैं जो रास्ता भटक गये हैं. इसे हासिल करने के लिए, वे अन्तर्राष्ट्रीय कानून-राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक कानून बना रहे हैं. ये अन्तर्राष्ट्रीय कानून स्थानीय/राष्ट्रीय कानूनों से ऊपर होंगे और इस कारण वे लोगों और देशों के ऊपर लागू होंगे. ये कानून देशों पर शासन करेंगे और जब देश उन अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों के अधीन होते हैं जो विश्व एकता के पक्षधर हैं, और नई विश्व शासन पद्धत्ति के लिए कार्य कर रहे हैं, तब वह देश अपनी आज़ादी और प्रभुसत्ता को समर्पित कर देगा. यह राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक स्तर पर कार्य करता है. यह एक

क्रमश: चलने वाली प्रक्रिया है जिस पर बहुत लोगों का ध्यान नहीं जाता है. शीघ्र ही वे लोग को सरकारी या कलीसिया के अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का पालन नहीं करेंगे, उन्हें विद्रोही नागरिक माना जाएगा. उनके ऊपर दण्ड तथा दूसरी तरह के अनुशासन लागू होंगे. एक बार पुन: पोप के अधिकार का दुरूपयोग दिखाई देगा, परन्तु बड़ा आश्चर्य यह होगा कि जो लोग कभी उसके अधिकार का विरोध करते थे वे अब उसका समर्थन करेंगे (प्रकाशितवाक्य 13:11-17).

Úæ× ·¤ÖèÕÎÜÌæÙãè

क्या इससे आपको आश्चर्य नहीं होता कि प्रोटेस्टेन्ट्स लोग रोम की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे हैं और रोम के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं? यह स्पष्ट है कि प्रोटेस्टेन्ट्स लोग यह भूल गये हैं कि रोम ने लूथर के समय में दूसरे विश्वास के लोगों को सताया था. जैसा कि हमने देखा है कि कितने ही लोग उनके विश्वास

के कारण जेलखानों में डाल दिये गये, सताये और दण्डित किये गये. इसलिए यदि हम अपनी बाइबल और इतिहास को नहीं जानते हैं तो हम यह नहीं जान

पाएँगे कि भविष्य में क्या होगा. रोम कभी बदलता नहीं और इतिहास अपने आप को दोहराता है. कैथोलिक कलीसिया ने मसीहियत का केवल चोगा मात्र पहना हुआ है. आज यह तंत्र भेड़ के भेष में एक भेड़िया है. इन लोगों के पास एक सफेद पोप होता है और एक काला पोप है. जबकि सफेद पोप अपनी शानो-शौक़त से दुनिया को आकर्षित करता है, जेस्यूट का लीडर. जबकि दूसरा पोप गुप्त में, अंधकार में कार्य करता है. जेस्यूट् वैटिकन के गुप्त रूप से प्रशिक्षित किये गये सिपाही हैं. जेस्यूट शपथ के अनुसार वे इसलिए देशों के बीच में युद्ध पैदा करते हैं कि पीड़ित देश उनकी शरण में आ जाएं. उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है कि वे दूसरी कलीसियाओं में घुसपैठ करके लूथरन में लूथरन, बैपटिस्ट में बैपटिस्ट, पेन्तीकॉस्टल में पेन्तीकॉस्टल और ऐडवेन्टिस्ट में ऐडवेन्टिस्ट बन जाएँ. शिक्षा के द्वारा वे पदवी प्राप्त कर सकते हैं, पदवी पाने के बाद वे उन कलीसियाओं को चर्च एकता आन्दोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं. वे पोप के प्रति पूरी तरह से वफादार हैं, और यदि वे चाहें और ज़रूरत हो तो वे अपने लक्ष्य को पाने के लिए तलवार या कोई भी हथियार उठा सकते हैं. वे लोग जो जेस्यूट बनने की शपथ लेते हैं, वे अपने काम को शुरू करने से पहले पोप की भक्ति की शपथ लेते हैं.

इसे समझने के लिए www.endtime.net पर जाकर- *दि इलीट टाइटंस द ग्रिप* अवश्य पढ़ें. अधिकाँश प्रोटेस्टेस्टेन्ट्स लोगों ने संसार में धार्मिक एकता हासिल करने के लिए रोम की भोली भाली दिखाई देनेवाली रणनीति की ओर से आँखें बन्द कर ली हैं.

°·¤Ì¢·¤ÁàÙ-ÜÍÚÙãè.

1617, 1717, 1817, 1917 में प्रोटेस्टेंट लोगों ने रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ खड़े होकर लूथर का विरोध दिवस मनाया, लेकिन 2017 में यह स्थिति पूरी तरह से उल्टी हो गई. अब उन्होंने रोम में कैथोलिक चर्च के साथ मिलकर संयुक्त रूप से इस दिन को एक उत्सव के रूप में मनाया है. उन्होंने मार्टिन लूथर और प्रोटेस्टेंटवाद का उत्सव नहीं मनाया है बल्कि उन्होंने कैथोलिक चर्च के साथ एकता दिवस का उत्सव मनाया है !

1999 में कैथोलिक कलीसिया ने लूथरनवर्ल्ड फेडरेशन के साथ मिलकर विश्वास के आधार पर उद्धार विषय पर एक संयुक्त घोषणा पत्र प्रकाशित करके यह घोषणा की है अब विरोध (प्रोटेस्ट) समाप्त हो गया है ! लेकिन विरोध अभी समाप्त नहीं हुआ है. परमेश्वर के अनुग्रह से 'अनुग्रह का द्वार' बन्द होने तक यह विरोध चलता रहेगा.

लूथर-कैथोलिक के एकता आयोग ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए 2013 में **'कन्फ्लिक्ट टू कम्यूनियन'** नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है. इस पुस्तक के 229 अंक में हम पढ़ते हैं कि **''भले ही वे (लूथरन धर्मशास्त्री) लूथर द्वारा पोपियत की आलोचना से कुछ हद तक सहमत हैं, फिर भी लूथरन लोग पोप को मसीह विरोधी मानने से इन्कार करते हैं.'' इसलिए आज अधिकांश कलीसियाओं के अगुवों को ऐसा नहीं लगता कि पोप मसीह विरोधी है.** अबव ेि वश्वव्यापीक लीसियाईए कता

आन्दोलन में भाग लेनेवाली वाली सभी कलीसियाओं के सदस्यों, जिनमें जेस्यूट पोप फ्राँसिस तथा रोमन कैथोलिक कलीसिया भी शामिल है, को मसीही मानते हैं जबकि कैथोलिक कलीसिया ने अपनी शिक्षाओं में कोई बदलाव नहीं किया है. चूंकि कैथोलिक चर्च ने अपनी शिक्षाओं में बदलाव नहीं किया है तो बदलाव फिर किसने किया है कि वे अब एकता चाहते हैं?

31 अक्टूबर 2017 को लूथरन और कैथोलिक कलीसिया के अगुवे विटनबर्ग में नहीं आए थे, बल्कि उन्होंने रोम में ''गुप्त रूप से'' मुलाक़ात की. उन्होंने सुधार (रिफॉर्मेशन) के एक और वर्ष पूरा होने पर एक संयुक्त वक्तव्य दिया.

विश्वव्यापी कलीसियाई एकता आन्दोलन प्रक्रिया में यह एक दुखद घटना है, लेकिन सच है कि प्रोटेस्टेंट लोग रोम में विलीन हो गये हैं. ऐसा लगता है कि रोमन कैथोलिक चर्च ने ज्यादातर कलीसियाओं में अपने लिए जगह बना ली है और यह कि प्रोटेस्टेंट कलीसियाएं धीरे-धीरे अपनी विशेष पहचान खो रही हैं. अब कोई भी धार्मिक अगुवा रोमन कैथोलिक कलीसिया का विरोध नहीं कर रहा है, सभी की आवाजें चुप हो गई हैं. फिर, रोमन कैथोलिक कलीसिया के विरोध में अपनी आवाज कौन उठाएगा? खैर, हम आशा करते हैं कि हमारी परिस्थिति और प्रभाव की परवाह किये बगैर इसका विरोध करेंगे.

1999 से, कैथोलिक कलीसिया ने विश्व मेथोडिस्ट काउसिंल, रूढ़ीवादी चर्च, संयुक्त राज्य अमेरिका में ईवेंजेंलिकल्स और सुधारवादी चर्चों ने विश्व गठबंधन के साथ संयुक्त वक्त्व्य पर अपनी सहमति दी है. यह प्रवृत्ति जारी रहने की संभावना है और हम देख रहे हैं धीरे-धीरे अधिक से अधिक कलीसियाओं के अगुए संयुक्त वक्तव्यों और समझौतों के माध्यम से रोम के करीब होनेवाले अपने मूल्यों को आगे बढ़ाया है. बाइबल का कहना है कि अंतत: वे सभी एकरूपता में होंगे, वे एक मन और एक रणनीति के होंगे और वे अपनी सामर्थ्य और अधिकार को 'पशु' (कैथोलिक चर्च, प्रकाशितवाक्य17:12-14) के लिए दे देंगे. इस प्रकार, आज हम वास्तविक समय आने के अन्त के बारे में बाइबल की भविष्यवाणियां देख रहे हैं, सही तस्वीर हमारी आंखों के सामने है. इसके अतिरिक्त, संक्षेप में बाइबल बताती है कि ये शक्तियां मसीह के विरूद्ध युद्ध करने जा रही हैं और उनके साथ साईडिंग के खिलाफ हैं. इस क्रांतिकारी समय में, हम अपने मार्ग का चयन करने के लिए बाध्य हैं- क्या हमें मसीह के साथ, या इस विश्व के अगुवों के साथ रहना चाहिए, जो वर्तमान में गलत दिशा में चला रहे हैं?

यदि लूथर जीवित रहता और देखता कि लूथरन कलीसियाओं ने रोमन कैथोलिकों के साथ मिलकर उसके द्वारा स्थापित धर्मसुधार दिवस को कैसे 'मनाया' है तो वह निश्चय ही कैथोलिकों और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंट दोनों को फटकार लगाता. वास्तव में जो प्रोटेस्टेन्ट लोग आज रोमन कैथोलिक कलीसिया के साथ प्रेमालाप कर रहे हैं उनका पतन हो चुका है. बाइबल का संदेश यह है : ***'हे मेरे लोगो, उन में से निकल आओ'*** (प्रकाशितवाक्य 18:4).

हम बाइबल के इन वचनों को आज पूरा होता हुआ

देख रहे हैं, *' **सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले*** और *'**तेरे व्यापारी (पोप) पृथ्वी के प्रधान थे, और तेरे टोने से सब जातियां भरमाई गईं थीं**'* 'प्रकाशितवाक्य 13:3 और 18:23'.

पोप के लोग जादू टोने का प्रयोग करते हैं, यह इतना स्पष्ट है कि अधिकाँश लोगों को यह एहसास ही नहीं होता कि क्या हो रहा है. लेकिन जब वे अन्तर्राष्ट्रीय रणनीति और कानून में सब को अपने साथ शामिल कर लेंगे, तब वे उन लोगों पर अत्याचार करेंगे जो उनकी झूठी शिक्षाओं को ज़ाहिर करते और उनका ठीक वैसे ही विरोध करेंगे जैसे उन्होंने लूथर, हाइरोनीमस, वाइक्लिफ, हस्स, बर्क्यून, ज़िवंग्ली और दूसरे लोगों का किया था.

€Ø‡ ·¤Í‡çÜ·¤ ·¤ÜèçâØ‡ÕÎÜ »§ã?

अब जबकि लूथर के बाद से 500 वर्ष बीत चुके हैं और हम पूछते हैं: क्या कैथोलिक कलीसिया बदल गयी है? नहीं! कैथोलिक कलीसिया आज भी उन शिक्षाओं और परम्पराओं को बढ़ावा देती है जो बाइबल की शिक्षा के विपरीत हैं. आइए इनमें से कुछ एक पर निगाह डालें:

1. कैथोलिक कलीसिया विश्वास करती है कि पोप पृथ्वी पर यीशु का प्रतिनिधि है. [वाइकार-का अर्थ प्रतिनिधि अर्थात् एक स्थानापन्न प्रतिनिधि होता है.] जबकि बाइबल कहती है कि यीशु ने उसका स्थान लेने के लिए पवित्रात्मा को भेजा है. (यूहन्ना 14:16-17). वे विश्वास करते हैं कि पतरस पहला पोप था, परन्तु त्रुटिपूर्ण पतरस मसीह का स्थान कैसे ले सकता है. यीशु ने कहा: ***''और मैं इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा''*** (मत्ती 16:15-18). इस पत्थर के लिए यूनानी शब्द-पेट्रा है. पेट्रा शब्द का अर्थ चट्टान होता है. पीटर (पतरस) का मूल यूनानी शब्द -पेट्रॉस है जिसका अर्थ एक लुढ़कने वाले छोटे पत्थर से होता है. हम तो मसीह के ऊपर ही अपनी कलीसिया बना सकते हैं, परन्तु त्रुटिपूर्ण पोप द्वारा जैसा कि हम सदियों से देखते आ रहे हैं, परमेश्वर की पवित्र कलीसिया का निर्माण कैसे किया जा सकता है? पौलुस इस्राएल की संतान के विषय में लिखता है जब वे जंगल में थे: ***''और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था.''*** (1 कुरिन्थियों 10:4). ***<u>वह चट्टान</u>*** मसीह है पतरस नहीं.

2. कैथोलिक कलीसिया विश्वास करती है कि

उनका पुरोहित प्रभु भोज के दौरान ब्रेड (रोटी) देते समय जब कुछ रहस्यमय शब्द बोलता है तो वह ब्रेड यीशु की वास्तविक देह में बदल जाती है. इस तरह से वे प्रत्येक प्रभु भोज में यीशु की देह को प्रत्येक बार नये बलिदान के रूप में चढ़ाते हैं. वे विश्वास करते हैं कि उनका पुरोहित सृष्टिकर्ता का सृजन कर सकता है और फिर उसे खा सकता है. जब यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की, उसने रोटीको आशीषित किया और उसे तोड़ा और कहा:***''यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो.''*** (1 कुरिन्थियों 11:24). जब हम उस रोटी को खाते हैं तो यह गोलगता के क्रूस पर हमारे लिए यीशु के बदन के तोड़े जाने और हमारे बदले में उसके लहू के बहाये जाने की याद दिलाता है. इसके अलावा बाइबल यह कहती है कि यीशु एक ही बार में हमेशा के लिए बलिदान हो गया. (इब्रानियों 7:28, 9:28). जब-जब प्रभु भोज में रोटी (ब्रेड) खायी और दाखरस पीया जाता है तो उसे प्रत्येक बार नये सिरे से बलिदान करना कैथोलिक कलीसिया के द्वारा प्रभु भोज में यीशु के बलिदान का मज़ाक उड़ाया जाता है. यह इस बात को दिखाता है कि वे इस बात को स्वीकार नहीं करते हैं कि यीशु का एक बार का बलिदान हमारा उद्धार करने के लिए पर्याप्त है.

3. कैथोलिक कलीसिया ने अपने कैटाकिज़म में से दूसरी आज्ञा को निकाल दिया है. दूसरी आज्ञा यह कहती है कि हमें ख़ुदी हुई मूर्तियों की पूजा नहीं करनी है. (निर्गमन 20:4-6). कैथोलिक कलीसिया में कुँवारी मरियम और संतों की मूर्तियों की पूजा की जातीह ै अ ैरअ ाराधनाक रनेव ालेस मझतेह ैं क फातिमा और संसार के दूसरे स्थानों में यह मरियम ही है जो दिखाई देती है. जबकि मरियम तो 2000 वर्ष पहले ही मर चुकी है तो मरियम के रूप में दिखाई देने वाली आत्मा यह कोई दूसरी आत्मा है.

4. कैथोलिक कलीसिया यह विश्वास करती है कि कुँवारी मरियम स्वर्ग पर उठाई गई है इसलिए हमारी प्रार्थनाएँ यीशु मसीह और पिता तक पहुँचने से पहले मरियम के सामने ही पेश की जानी चाहिए. यह तो कैथोलिक कलीसिया की मनगढंत कहानी है ,क्योंकि मरियम को मरे हुए 2000 वर्ष हो चुके हैं. और दूसरे

मृतकों के समान वह कब्र में विश्राम करते हुए पुनरुत्थान की प्रतीक्षा कर रही है. (1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17).

बाइबल स्पष्टता से बताती है कि ***''स्वर्ग में गवाही देने वाले तीन हैं, पिता, वचन और पवित्रात्मा और ये तीनों एक हैं.''*** (1 यूहन्ना 5:7). यह पद आज की अनेक आधुनिक बाइबलों में से आंशिक रूप से हटा दिया गया क्योंकि कैथोलिक कलीसिया चाहती है कि स्वर्ग में चार विशेष पवित्र जन दिखाये जाएं और इनमें मरियम चौथी प्राणी हो ताकि वे मरियम के द्वारा अपनीप्रार्थनाओंक ोप रमेश्वरत कप हुँचाएं.य ीशु कहता है:***''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई भी पिता के पास नहीं पहुँच सकता.''*** (यूहन्ना 14:6).

पिता और हमारे बीच में मध्यस्थता करने वाला केवल यीशु मसीह ही है. पिता तक हमारी प्रार्थनाएँ यीशु मसीह के द्वारा ही पहुँचती हैं. ***''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है.''*** (1 तीमुथियुस 2:5).

5. कैथोलिक कलीसिया कहती है कि पोप और उनके पुरोहित किसी भी व्यक्ति के पाप क्षमा कर

सकते हैं. तब यह प्रश्न पूछा जाता है: हमारे पापों से क्षमा पाने के लिए हमें पुरोहित के पास, मरियम के पास या फिर यीशु के पास जाना चाहिए? बाइबल इसे स्पष्ट करती है, ***''पाप तो व्यवस्था का विरोध है.''*** (1 यूहन्ना 3:4). ***''इसलिए कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'.*** '(रोमियों 3:23) ***''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है...''*** (रोमियों 6:23). परिणामस्वरूप हम सब के ऊपर

मृत्यु का दण्ड लागू है. केवल यीशु ही है जो हमें मृत्यु से बचा सकता है. उसने हमें बनाया है, उसने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया और वही हमें पाप के दण्ड से छुड़ा सकता है. केवल यीशु ही है जिसने पृथ्वी पर पाप रहित जीवन बिताया है. हम पढ़ते हैं: ***''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलता में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन् वह सब बातों मेंह मारेस मानप रखात ोग या,त ौभीं नष्पाप निकला.''*** (इब्रानियों 4:15). इसलिए: ***''इसलिए यदि पुत्र तम्हें स्वतंत्र करेगा तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे.''*** (यूहन्ना 8:36).

जब हम अपने पापों से पश्चाताप करते हुए क्षमा माँगें तो केवल यीशु ही हमें स्वतंत्र कर सकता है. क्या हमें पुरोहित, पोप के पास या फिर यीशु के पास जाना चाहिए? हम यह पहले ही देख चुके हैं कि पिता परमेश्वर और हम मनुष्यों के बीच में केवल एक ही मध्यस्थ- यीशु मसीह है. हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमें एक दूसरे के प्रति किये गये अपने पापों को एक दूसरे के सामने मान लेना चाहिए. हम पढ़ते हैं: ***''सचेत रहो, यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे समझा, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर.''*** (लूका 17:3).

हम उस इंसान के पास जाएँगे जिसके प्रति हमने पाप किया है, अपने पाप को स्वीकार करेंगे और फिर उसे यह अवसर देंगे कि वह हमें माफ कर सके. पोप या पुरोहित को इस बात से क्या लेना-देना. क्योंकि अन्तत: क्षमा तो यीशु से मिलती है. प्रभु की प्रार्थना में हम पढ़ते हैं: ***''और जिस प्रकार हमनें अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमें क्षमा कर.''*** (मत्ती 6:12).

यूहन्ना इसका वर्णन इस प्रकार से करता है: ***''मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह.''*** (1 यूहन्ना 2:1-2).

केवल यीशु मसीह के द्वारा ही पापी को क्षमा मिल सकती है और इस प्रकार उसे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश मिल सकता है. पिता के पास केवल यीशु मसीह ही हमारा उद्धारकर्ता, मध्यस्थ और वकील है. हमें अपने पापों को लेकर केवल उसी के पास जाना है. जब हमें एहसास होता है कि हमने पाप किया है, और पश्चाताप करके परमेश्वर से क्षमा प्राप्त कर ली है, तब यह प्रतिज्ञा हमारे लिए है: ***''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है.''*** (1 यूहन्ना 1:9).

कैथोलिक पुरोहित और पोप अपने आप को मसीह के स्थान पर समझते हैं, और पापों को क्षमा करते हुए मसीह की भूमिका निभाने का दावा करते हैं. बाइबल ने इस धर्मत्याग के बारे में भविष्यवाणी की है. हम पढ़ते हैं: ***''किसी रीति से किसी के धोख़े में न आना, क्योंकि वह दिन न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात्***

विनाश का पुत्र प्रगट न हो. जो विरोध करता है, और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को ईश्वर ठहराता है. ''(2 थिस्सलुनीकियों 2:3-4).

जो पाप पुरुष, विनाश का पुत्र और अधर्मी कहलाता है, वह स्वंय को मसीह के स्थान में रखता है. वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठ कर परमेश्वर के समान व्यवहार करता है. यह कोई और नहीं बल्कि पोप ही है. यही वह अधर्मी है जिसने परमेश्वर की दस आज्ञाओं को बदल दिया है. वह मसीह की मध्यस्था का स्थान लेकर पाप क्षमा करने का दावा करता है. प्रोटेस्टेन्ट्स संसार पाप पुरुष, विनाश का पुत्र और अधर्मी के साथ मिलकर क्यों कार्य करना चाहता है?

6. कैथोलिक कलीसिया आत्मा की अमरता में विश्वास करती है. वे विश्वास करते हैं कि जब कोई मरता है, वह आत्मा के रूप में जीवित रहता है. बाइबल इस विषय में क्या कहती है? हम पढ़ते हैं:***''तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वांस फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया.*** ''(उत्पत्ति 2:7). यह कहती है कि आदम ने कोई आत्मा तो नहीं पाया लेकिन वह जीवित प्राणी **बन** गया. हम आगे पढ़ते हैं कि वह कौन है जो मरता है: ***''जो प्राणी पाप करे, वही मरेगा.*** ''(यहेजकेल 18:20).

आत्मा की अमरता की शिक्षा की शुरूआत शैतान ने अदन की वाटिका में की थी. परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था कि वे एक विशेष पेड़ का फल न खाएँ। यदि वे उस पेड़ का फल खाएंगे तो वे मर जाएँगे. परन्तु शैतान ने हव्वा से कहा: नहीं ***''तुम निश्चय न मरोगे.*** ''(उत्पत्ति 3:4).

शैतान का यह झूठ आत्मा की अमरता की शिक्षा का आधार है जो सभी धर्मों में फैल रही है. परन्तु बाइबल क्या कहती है? बुद्धिमान सुलेमान कहता है: ***''क्योंकि जीविते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है. उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नष्ट हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिये उनका और कोई भाग न होगा। जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना, क्योंकि अधोलोक में जहाँ तू जाने वाला है, न काम न युक्ति न ज्ञान और न बुद्धि है.*** ''(सभोपदेशक 9:5, 6,10).

आइए एक दो और पदस्थल देखते हैं: ***''इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों***

में हैं वे उसका शब्द सुनकर निकल आएँगे. जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे.'' (यूहन्ना 5:28-29).

पौलुस भी यीशु के दूसरे आगमन के विषय में बात करते समय इसी निष्कर्ष पर पहुँचता है: ***''क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आगमन तक बचेर हेंगे,स ोयेह ुओंस ेक भीअ ागेन ब ढ़ेंगे. क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे. तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे.''*** (1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17).

इस प्रकार हम देखते हैं कि मृतक कब्रों में हैं और यीशु उन्हें जिलाएगा. क्या इस बात से आपको आश्चर्य होता है? हमने देखा है कि मृतक कुछ नहीं जानते हैं. वे पुनरुत्थान तक कब्रों में रहेंगे. धर्मी जीवन के पुनरुत्थान के लिए और दुष्ट दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे.

जब यीशु का मित्र लाज़र मर गया, यीशु उसके पास आया. लाज़र चार दिन से कब्र में था और उसकी लाश सड़ने लगी थी. यीशु ने कहा कि लाज़र मर चुका था और उसने मृत्यु की तुलना नींद से की. यीशु ने उससे कहा: ***''लाज़र, बाहर निकल आ.''*** (यूहन्ना 11:43). लाज़र निश्चय ही अपनी कब्र से बाहर निकल कर आया था.

बहुत से पादरी लोग यह प्रचार करते हैं कि जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो वह मृतक स्वर्ग या नरक को जाता है. यदि धर्मी मृतक मरने के बाद सीधे ही स्वर्ग चले जाते हैं, तो हमें यह विश्वास करना होगा कि यीशु का मित्र लाज़र भी मरने के बाद स्वर्ग चला गया था. परन्तु वह तो स्वर्ग से नीचे उतर कर नहीं आया और न ही वह बादलों से नीचे उतरा क्योंकि यीशु ने उसे **कब्र से** जीवित किया. बाइबल कहती है: ***''और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है.''*** (इब्रानियों 9:27). मृत्यु और मसीह के दूसरे आगमन के बीच में एक दिन न्याय होगा, और कोई पोप या पुरोहित नहीं किन्तु यीशु मसीह ही यह तय करेगा किसे अनन्त जीवन मिलेगा और कौन अनन्त मृत्यु को प्राप्त होगा. (2 कुरिन्थियों 5:10; यूहन्ना 5:26-29). बाइबल वास्तव में यह कहती है, ***''क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है.''*** (रोमियों 6:12).

इस कहानी से हम सीखते हैं कि यीशु को लाजर को अन्तिम दिन में जीवित करना था. मार्था ने यीशु से कहा: ***''मैं जानती हूँ की अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा.*** (यूहन्ना 11:24). अन्तिम दिन वह दिन होगा जब यीशु पुन: पृथ्वी पर आएगा.

धर्मशास्त्र यह कहता है कि सिर्फ यीशु ही अमर है. यह लिखा है: ***''वह जो परमधन्य परमेश्वर तथा एक मात्र अधिपति है और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु हैं. अमरता केवल उसी की है, वह अगम्य ज्योति में रहता है.''*** (1 तीमुथियुस 6:15-16). केवल परमेश्वर ही अमर है. मनुष्य तो नाशवान है, लेकिन जब यीशु वापस आएगा तब विश्वासी लोग अमरता को पहन लेंगे. पौलुस इसका वर्णन इस प्रकार से करता है: ***''देखो मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाऐंगे. यह क्षण भर में, पलक मारते ही, अन्तिम तुरही के फूँकते ही होगा. क्योंकि यह अनिवार्य है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहन ले और मरणशील अमरता को पहन लेगा तब वह वचन जो धर्मशास्त्र में लिखा है, पूरा हो जाएगा. ''जय ने मृत्यु को निगल लिया.''*** (1 कुरिन्थियों15:51-54).

ऐसे बहुत से लोग हैं, जो यह विश्वास करते हैं कि जब इंसान मरता है तो एक आत्मा है जो शरीर से निकल जाती है, और हमारे आस पास घूमती-फिरती है और लोगों को प्रभावित करती है और उसमें इतनी क्षमता है कि वह लोगों को संदेश दे सकती है. यहाँ पर एक आत्मावादी पत्रिका से एक उदाहरण प्रस्तुत है: ***''प्रेतविद्या क्या है? प्रेतविद्या एक विश्वास है कि शरीर से बाहर निकले के बाद भी आत्मा बनी रहती है, और वह जीवित लोगों के साथ मीडियम (भगत-तांत्रिक) कहलाने वाले लोगों के द्वारा अपना संपर्क बनाए रखती है.''*** (डेनमार्क की एक प्रेतविद्या की पत्रिका-स्प्रिटिस्ज़म, पेज़ 84, से साभार).

इस संसार के आधे से ज़्यादा लोग पुनर्जन्म-एक ऐसी शिक्षा जो यह सिखाती है कि आत्मा कभी नहीं मरती है, परन्तु एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक, एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है, में विश्वास करते हैं. ऐसी शिक्षा बाइबल की शिक्षा से मेल नहीं खाती है. धर्मशास्त्र की शिक्षा के अनुसार, धर्मशास्त्र कहता है कि मनुष्य मरने के बाद पुन: मिट्टी में मिल जाता है. (भजनसंहिता 104:29), मरे हुए कुछ भी नहीं जानते (सभोपदेशक 9:5). उनमें कोई कल्पना करने की शक्तियाँन हींह ैं.(भजनसंहिता1 46:4).अ बज ो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है, उसमें सदा के लिए उनका और कोई भाग न होगा (सभोपदेशक 9:6). मरे हुए कब्रों में हैं (अय्यूब 17:13), और जो मरे हुए हैंव ेज ीवितन हींह ैं.(अय्यूब1 4:1,2 ;2 र ाजा 20:1).

हम पहले ही देख चुके हैं, कि बाइबल अपने आपको आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, प्रेतविद्या और ऐसी ही दूसरी शिक्षाओं से अलग रखती है. धर्मशास्त्र इन सब चीजों को अति घृणित बताता है. हम पढ़ते हैं: ***तुझ में कोई ऐसा ना हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ाने वाला, भावी कहने वाला, शुभ -अशुभ मुहुर्तों को मानने वाला, टोन्हा, तांत्रिक, बाजीगार, ओझाओं से पूछने वाला, भूत साधने वाला अथवा भूतों का जगाने वाला हो. क्योंकि जितने ऐसे काम करते हैं, वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं, और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे सामने से निकालने पर है.''*** (व्यवस्थाविवरण 18:10-12).

धर्मशास्त्र पूरी तरह से आत्मा की अमरता, प्रेतविद्या, पुनर्जन्म, और अनेक रहस्यमयी पूर्वी सिद्धान्तों/धर्मों को नकारता है.

7. कैथोलिक कलीसिया लोगों को डराने के लिए अनन्त यातना की शिक्षा देती है. वे लोगों को यह

समझाने की कोशिश करते हैं कि जो कोई रोमन कैथोलिक कलीसिया की शिक्षाओं के साथ वफादार नहीं रहेगा, वह नरक में जाएगा. वे कहते हैं कि नरक अनन्त आग से जलने वाला एक ऐसा स्थान है, जो लोग अविश्वासी हैं वे मरने के बाद वहाँ जाते हैं, और उन्हें लगातार आग और गंधक के बीच यातनाएं दी जाती हैं.

कैथोलिक कलीसिया ने अनुग्रह (पाप करने का अधिकार) बेचा है. वे कहते हैं कि जो कोई इंसान कलीसिया को पैसा देगा, उसे इस बात की गारन्टी दी जाती है कि मरने के बाद वह **परगाटॉरी** में जाएगा और उसे कम सज़ा मिलेगी.

धर्म-सुधार के दौरान यह समझा जाता था कि **परगाटॉरी** वह जगह है जहाँ मरने के बाद आत्माओं को उनके पापों के लिए तब तक दण्डित किया जाता है जब तक वे शुद्ध होकर स्वर्ग में प्रवेश न कर लें. लूथर का यह मानना था कि ऐसी शिक्षा पूरी तरह से धर्मशास्त्र की शिक्षा के विपरीत है और इसे केवल इसलिए सिखाया जाता है कि कैथोलिक कलीसिया के ख़ज़ाने में रूपया-पैसा आए.

कैथोलिक कलीसिया यह सिखाती है कि **परगाटॉरी** वह अस्थाई जगह है, जहाँ पर मरने के बाद सज़ा दी जाती है. जो कोई **परगाटॉरी** में डाला जाता है वह अपने आप से बाहर नहीं आ सकता है लेकिन दूसरे लोग उसकी मदद कर सकते हैं. इसलिए कुछ लोग मरे हुओं के लिए प्रार्थनाएँ करते हैं, और यहाँ तक की कैथालिक कलीसिया को पैसा भी देते हैं, कि उनके प्रिय मृतक जन जो **परगाटॉरी** में हैं उनको **परगाटॉरी में** कम से कम सज़ा मिले.

पोप ने पैसों के बदले में क्षमा भी बाँटी है. इसे अनुग्रह (विलासिता-इंडलजेंसिस) कहा गया है. हम थोड़ा समझाने की कोशिश करते हैं: किसी मनुष्य ने पाप किया, उदाहरण के लिए, व्यभिचार, या फिर 10 आज्ञाओं में किसी भी आज्ञा को तोड़ा है तो वह इंसान उस पाप की सजा से बचने के लिए पोप को पैसे दे सकता है. उसे गुनाहों की माफ़ी कहा गया है. वे जो दौलतमंद थे वे कितने ही पाप करने का खर्च उठा सकते थे.

लूथर के समय में टेटज़ेल नाम का एक आदमी अनुग्रह का (पाप करने का अधिकार) बेचने वाला और कैथोलिक कलीसिया का प्रवक्ता हुआ करता था, उसने घोषणा की कि इस अधिकार-पत्र के ख़रीदनेवाले इंसान के वे सब पाप तो क्षमा हो ही जाएँगे जो उसने अब तक किये हैं, उसके वे पाप भी क्षमा हो जाएँगे जो करने की वह योजना बना रहा है. उसे अपने पापों से पश्चाताप करना ज़रूरी नहीं होगा. (डी, ॲबीग्रे, किताब 3, अध्याय 1). इस प्रकार से लोगों को यह भरोसा हो गया कि पाप करने का अधिकार ख़रीदने से न केवल जीवितों बल्कि मरे हुओं के पाप भी क्षमा हो जाएँगे. उन्होंने दावा किया कि जैसे ही पैसे कैथोलिक कलीसिया के ख़जाने में जाते हैं वैसे ही उनके प्रिय की आत्मा परगाटोरी से आज़ाद होकर स्वर्ग में उड़ जाती है.

लोग इतने युगों से रोमन कैथोलिक कलीसिया को रूपया-पैसा देते आ रहे हैं. बहुतों ने रोमन कैथोलिक कलीसिया को भारी रकम इसलिए दी है क्योंकि उनका विश्वास है कि यह पैसा उनके प्रियजनों की परगाटॉरी के कष्ट सहने में कुछ मदद करेगा. कैथोलिक कलीसिया झूठे वादों के आधार पर अमीर होती जा रही है. उन्होंने लोगों को भय दिखाने वाले इस प्रचार से पहले ही बहुत सारा धन इकट्ठा कर लिया है. उन्होंने लोगों को धोखा देकर इतने सारे सुन्दर गिरजाघर / कैथेड्रल बनाने में सफलता हासिल की है. जिस तरह से उन्होंने लोगों को धोख़ा दिया है इस पर उन्हें शर्म आनी चाहिए.

लेकिन धर्मशास्त्र इस बारे में क्या कहता है, क्या होता है जब लोग मरते हैं? धर्मशास्त्र कहता है कि ***''पाप की मजदूरी मृत्यु है''*** (रोमियों 6:23). जब बाइबल यह कहती है कि पाप की मज़दूरी मृत्यु है, तो फिर कोई पीड़ा नहीं है. धर्मशास्त्र कहता है कि अधर्मियों को उनके कर्मों के हिसाब से सज़ा मिलेगी. (प्रकाशितवाक्य 20:13). अगर किसी ने बहुत सारे बुरे कर्म किए हैं, तो उन्हें बहुत लम्बी और कठोर सज़ा मिलेगी. भविष्यद्वक्ता मलाकी इसकी पुष्टि करता है, ***''क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूँटी बन जाएँगे और उस आने वाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है''*** (मलाकी 4:1).

सारी बुराईयों की जड़ दुष्ट शैतान है और सारे अधर्मी लोग उसकी शाखाएं हैं. वे सब भूसी की तरह जल जाएँगे. भूसे का एक बड़ा और गीला गट्ठर ज़्यादा समय तक जलता है, लेकिन एक छोटा और सूखा गट्ठर थोड़े समय में ही जल जाता है. इससे हम यह सीखते हैं कि दुष्टों को किस प्रकार से दण्डित किया जाएगा. उन्हें उनके कर्मों के अनुसार सज़ा दी जाएगी और वे मृत्यु में ख़त्म हो जायेंगे. लेकिन आग की झील की यह सज़ा अभी नहीं मिलेगी. हम पढ़ते हैं, ***''क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूँटी बन जाएँगे.''*** यह तो भविष्य में, समय के अन्त में होगा.

यूहन्ना इसका वर्णन करते हुए लिखता है कि किस प्रकार से अधर्मी लोगों को आग की झील में सजा मिलेगी, ***''जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया.''*** (प्रकाशितवाक्य 20:15).

यही लेखक आग की झील का विवरण इस प्रकार से करता है, ***''मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए. यह आग की झील दूसरी मृत्यु है.''*** (प्रकाशितवाक्य 20:14). यूहन्ना आगे लिखता है, ***''पर कायरों, अविश्वासियों, घिनौनों, हत्यारों, व्यभिचारियों, टोन्हों, मूर्तिपूजकों और सब झूठों***

का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है.'' (प्रकाशितवाक्य 21:8).

उन दुष्ट शहरों- सदोम और अमोरा का क्या हुआ? वे उस आग में जल गए जो बुझ नहीं सकती थी, लेकिन जैसे ही सब कुछ जल गया, आग अपने आप बुझ गई. धर्मशास्त्र इसका वर्णन इस प्रकार करता है, ***''जिस रीति से सदोम, अमोरा और उनके आस पास के नगर जो इनके समान व्यभिचारी हो गए थे और पराए शरीर के पीछे लग गए थे. आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टांत ठहरे हैं.''*** (यहूदा 7). यह बताता है कि इन शहरों और इसके निवासियों को अनन्त आग में जलना था. यह उनके कुकर्मों की सज़ा थी. हम जानते हैं कि ये शहर अब तक जल नहीं रहे हैं. जैसे ही सब कुछ जलकर नष्ट हो गया और राख में बदल गया, आग अपने आप बुझ गयी. प्रेरित पतरस हमें समझाता है कि सदोम और अमोरा जो कुछ अन्त समयम ेंह ेनिव ालाह ैउ सकाए कन मूनाह ै.व ह लिखता है: ***''उसने सदोम और अमोरा नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया कि उन्हें भस्म करके राख में मिला दिया ताकि वे आने वाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिए एक दृष्टान्त बनें.''*** (2 पतरस 2:6).

ØãâÊææÖçßcØ×ÎèÁæ°»è

यीशु ने भी इस विषय में अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किये हैं, ***''जैसे जंगली दाने के पौधे उखाड़े जाते और जलाए जाते हैं वैसे ही जगत के अन्त में होगा. मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे. वे उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे. वहाँ वे विलाप करेंगे और दाँत पीसेंगे.''*** (मत्ती 13:40-42).

हम यहाँ पर फिर से यही देखते हैं कि दण्ड भविष्य में-जगत के अन्त में दिया जाएगा. रोमन कैथोलिक कलीसिया ग़लत शिक्षा देती है, अधर्मी लोग नरक की अनन्त आग में अभी नहीं जल रहें हैं. दुर्भाग्य से नरक की अनन्त आग की यह कैथोलिक शिक्षा प्रोटेस्टेन्ट्स कलीसियाओंम ेंभ ीअ पनेअ ापह ीफ ैलग यीह ै. शैतानके अ न्तिमद ण्डक ाि ववरणइ सप ्कारस े किया गया है, ***''तेरे अधर्म के कामों की बहुतायत से और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे पवित्रस्थान अपवित्र हो गए, सो मैंने तुझ में से ऐसी आग उत्पन्न की जिससे तू भस्म हुआ, और मैं ने तुझे सब देखने वालों के सामने भूमि पर भस्म कर डाला है. देश-देश के लोगों में से जितने तुझे सब जानते हैं, सब तेरे कारण विस्मित हुए, तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी पाया न जाएगा.''*** (यहेजकेल 28:18-19).

वहाँ पर कोई अनन्त पीड़ा नहीं होगी जैसा कि कैथोलिक कलीसिया सिखाती है. अधर्मियों की सजा मृत्यु और राख के साथ खत्म हो जाएगी. आग तब तक नहीं बुझेगी जब तक सज़ा खत्म नहीं हो जाती. यह अनन्त आग इस तरह से है कि यह तब तक नहीं बुझेगी जब तक सज़ा पूरी नहीं हो जाती है. अंग्रेज़ी भाषा का 'इटरनल' शब्द यूनानी भाषा के 'ऐओन' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ-**लम्बे समय तक, जीवन भर, अनन्त** है. इसलिए जब अधर्मियों को आग की झील में सज़ा दी जाएगी, तो यह उनके कर्मों के अनुसार, ''**लम्बे समय तक**'' या उनके ''**जीवन भर**'' के लिए होगी. परमेश्वर ने शैतान के कामों का अन्त करने का वादा किया है और जब सारे अधर्मियों को सज़ा मिल चुकी होगी, परमेश्वर फिर से एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी बनाएगा.

प्रेरित पतरस इस बारे में लिखता है: ***''उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं, जिसमें धार्मिकता वास करती है. इसलिए हे प्रिय भाइयो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो प्रयत्न करो कि तुम शान्ति***

से उसके सामने निष्कंलक और निर्दोष ठहरो.'' (2 पतरस 3:13-14). यूहन्ना भी ऐसे ही निष्कर्ष पर आता है: ***''फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी नष्ट हो गयी थी. समुद्र भी न रहा.''*** (प्रकाशितवाक्य 21:1).

हम उन लोगों से यह सवाल पूछना चाहेंगे जो अनन्त दण्ड की धारणा में विश्वास करने की ज़िद करते हैं. **''जब पृथ्वी ग्रह जल जाएगा और समुद्र भी नहीं रहेगा उस समय नरक कहाँ होगा?''** यह पृथ्वी पर तो नहीं होगा क्योंकि पृथ्वी पर की सब वस्तुएँ जल चुकी होंगी. पाप का नामोनिशान नहीं बचेगा. यह तो धर्मियों के अनुभवों को नाश करेगा और इसे परमेश्वर ने पहले ही से देख लिया है. इसलिए सारी बुराई जल जाएगी और हमेशा के लिए नाश हो जाएगी.

जब सब बुराई समाप्त हो जाएगी, फिर परमेश्वर एक नयी पृथ्वी और एक नया आकाश बनाएगा. वहाँ सब कुछ शान्तिमय और अच्छा होगा. परमेश्वर एक बार फिर से सब कुछ वैसा ही बनाएगा जैसा अदन की वाटिका में पाप के प्रवेश करने से पूर्व था और जब परमेश्वर के साथ आमने-सामने वार्तालाप हुआ करता था. स्वर्ग में कोई भी चोर, कोई धोखा देने वाला, कोई खूनी, कोई सिपाही, कोई दर्द या आँसू नहीं होगा. धर्मशास्त्र नयी पृथ्वी का वर्णन इस प्रकार से करता है: ***''वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा. इसके बाद न मृत्यु रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी, पहली बातें समाप्त हो गईं.''*** (प्रकाशितवाक्य 21:4).

अगर ऐसा होता कि अधर्मी लोग अनन्त पीड़ा में रहते, तो उनके लिए इस पृथ्वी पर कोई जगह नहीं होगी क्योंकि पृथ्वी रहेगी ही नहीं, और स्वर्ग में उनके लिए कोई जगह नहीं होगी क्योंकि वहाँ पर न तो दर्द है, न आँसू हैं, और न ही यातना है. धर्मी ही नयी पृथ्वी पर निवास करेंगे. परमेश्वर करे कि इस लेख को पढ़ने वाले सभी लोग यीशु मसीह को ग्रहण करें और पवित्रात्मा की शक्ति से उसके सच्चे गवाह बनें और जबव हप ुकारेत ोप रमेश्वरक अ नुग्रहस उ सके पवित्र लोगों में शामिल पाये जाएँ और नयी पृथ्वी में उनका निवास हो!

अनन्त यातना की शिक्षा भय पर आधारित एक झूठी शिक्षा है. इसलिए इसे आग में फेंक कर जला दो. इस शिक्षा का यीशु के प्रेम के साथ कोई लेन देन नहीं है. यीशु हमारे लिए सिर्फ अच्छा चाहते हैं, और उसने शैतान को यह सब करने की अनुमति सिर्फ इसलिए दी है कि सब लोग देख सकें कि वह शैतान है. परमेश्वर किसी को भी विवश नहीं करता है. लेकिन शैतान इसके विपरीत करता है. जब सारे सबूत सामने लाए जाएँगे, परमेश्वर प्रेम से शैतान को और उन सब को जो शैतान की तरफ हो गये हैं नाश कर देंगे . हम इसलिए न्याय के उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब परमेश्वर एक नयी पृथ्वी और एक नया आकाश बनाएगा, जहाँ पर सिर्फ धार्मिकता वास करेगी और जहाँ पर यीशु का प्रेम अनन्त शांति और खुशी के साथ वास करेगा.

8. कैथोलिक कलीसिया नवजात् शिशुओं को बपतिस्मा देती है और बाद में उनका 'कनफर्मेशन' करती है. नवजात् शिशुओं के बपतिस्मे की जड़ें ऑगस्तिन के 'मूल पाप' की शिक्षा में पाई जाती हैं. ऑगस्तिन यह विश्वास करते थे कि प्रत्येक बालक पापक स ाथप दाह ोताह .इ सलिएअ गरब ालक बीमार है और मर सकता है, तो यह ज़रूरी है कि पादरी यथाशीघ्र आकर बालक के सिर पर पानी के छींटे डालकर उसका बपतिस्मा करे. उसके बाद यह माना जाता था कि अब बालक विश्वासी बन गया है और उसने उद्धार प्राप्त कर लिया है. आज भी यह प्रथा चल रही है. लेकिन एक छोटे बालक ने कुछ भी ग़लत नहीं किया है. वह नहीं समझता है कि क्या सही है,

और क्या ग़लत. जीवन में यह क्षमता तो बाद में विकसिक होती है. धर्मशास्त्र कहता है कि ***''पाप तो व्यवस्था का विरोध है''*** (1 यहून्ना 3:4). और ***''जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का.''*** (यहेजकेल 18:20).

यह पद हमें सफाई से बताता है कि बच्चे को उसके माता पिता के पाप विरासत में नहीं मिलते हैं. यह तो तब होता है जब इन्सान समझने योग्य बड़ा हो जाता है कि भले और बुरे में फर्क कर सके तभी उसे उसके पाप के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है. इस प्रकार बालक का ऐसा कोई पापपूर्ण बड़ा जीवन नहीं है कि जिसे दफन करने की ज़रूरत हो, क्योंकि वह तो अब तक निर्दोष है. इस प्रकार से नवजात् शिशुओं का बपतिस्मा न तो ज़रूरी है और न ही बाइबल सम्मत है. असलियत तो यह है कि एक निर्दोष बालक इस पापमय दुनिया में आया है और उसे अपने माता-पिता का पापी स्वभाव विरासत में मिला है, और उस पर उसी तरह से परमेश्वर का न्याय लागू है जैसे कि आदम के पतन के बाद उसके ऊपर लागू था. ***''तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा''*** (उत्पति 3:19). तौभी बालक ने उस उद्धार से इंकार नहीं किया है जो यीशु ने हम सब के लिए हासिल किया है. उनके लिये उसकी अच्छाईयों तक पहुँच संभव है. जब माताएँ अपने बच्चों को यीशु के पास लेकर आईं, तब यीशु ने उनसे कहा, ***''बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना ना करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है, उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी.''*** (मरकुस10:13-16). यीशु ने उन बच्चों को बपतिस्मा नहीं दिया, लेकिन उसने उन्हें आशीष दी. जब बालक छोटा है तो हमें भी ऐसा ही करना चाहिए.

बालकों के बपतिस्में की शिक्षा के पीछे, माता-पिता को बालकों के बदले में विश्वास करना पड़ता है क्योंकि बालक स्वयं ऐसा करने के योग्य नहीं होते हैं. लेकिन धर्मशास्त्र कहता है: ***''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है.''*** (रोमियों 10:17). बालक प्रचार या शिक्षा को नहीं समझ सकता है इसलिए उसके पास उसका अपना विश्वास नहीं होता है. हम यह भी पढ़ते हैं: ***''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा.''*** (मरकुस 16:16). इसका अर्थ यह हुआ कि जिसको भी बपतिस्मा लेना है, उसका अपना विश्वास होना चाहिए. इस प्रकार जब माता-पिता अपने बालकों के बदले में विश्वास करते हैं तो यह तो ग़लत काम है. पुरोहित और माता-पिता दोनों यही कहते हैं कि बड़े होने पर 'कनफर्मेशन' के समय शिशु में ख़ुद विश्वास करने लगेगा लेकिन इस बात की कोई गारन्टी नहीं है. आइए हम बाइबल से बपतिस्में के कुछ उदाहरण देखते हैं. ध्यान दें कि विश्वास अनिवार्य है.

जब फिलिप्पुस ने इथियोपियन खोजे को मसीह का सुसमाचार सुनाया, तब खोजे ने कहा: ***''देखो यहाँ जल है. अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रुकावट है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो यह हो सकता है. उसने उत्तर दिया, ''मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र है.'' तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी. फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया.''*** (प्रेरितों के काम 8:26-38).

जब फिलिप्पुस ने सामरी प्रदेश में मसीह का सुसमाचार प्रचार किया, वहाँ बहुत से लोगों ने उसके संदेश को ग्रहण किया. धर्मशास्त्र हमें फिलिप्पुस के प्रचार के नतीजे के बारे में बताता है: ***''उन्होंने फिलिप्पुस की बातों पर विश्वास कर लिया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का***

सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे.'' (प्रेरितों के काम 8:12). ये स्त्री-पुरुष थे जिन्होंने बपतिस्मा लिया, बच्चे इसमें शामिल नहीं थे. धर्मशास्त्र में हम जेल के दरोगा की एक कहानी भी पढ़ते हैं, जिसे बपतिस्मा दिया गया था. कुछ लोग कह सकते हैं कि उसके घराने में बच्चे भी रहे होंगे जिन्हें बपतिस्मा दिया गया होगा. यहाँ ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इनमें छोटे बच्चे भी शामिल थे. ये ज़रूर बताता है कि उन लोगों ने प्रचार सुना और जिन्होंने बपतिस्मा पाया. उन्होंने यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया. यहाँ हम उस कहानी के बारे में भी पढ़ते हैं: ***''वह उन्हें बाहर लाकर बोला महाशयों, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?'' उन्होंने कहा, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा.'' उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया. रात को उसी समय उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव***

धोए. उसने अपने सब लोगों के साथ तुरन्त बपतिस्मा लिया. वह उन्हें अपने घर में ले गया. उसने उनके आगे भोजन परोसा और अपने सारे परिवार के साथ परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द मनाया. ''(प्रेरितों के काम 16:30-34).

यहाँ पर हम पौलुस को फिलिप्पी देश में जेल के एक दरोगा और उसके पूरे परिवार से बात करते हुए देखते हैं. उन्होंने विश्वास से यीशु मसीह को ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया. यदि उनके बीच में बच्चे मौजूद थे तो वे इतने बड़े थे कि पौलुस उन्हें मसीह का वचन सुनाता है और वे उस वचन को समझ कर मसीह पर विश्वास करने के बाद बपतिस्म लेते हैं.

''बैपटिज़्म'' लैटिन शब्द ''बैपटिज़ो'' से लिया गया है जो लुहार के काम में प्रयोग किया जाता है. यह हमें बताता है कि किस तरह से किसी कोई वस्तु पानी में पूरी तरह डुबो दी जाती है. अगर लुहार ने किसी लोहे के टुकड़े को कोई आकार दिया और वह चाहता है कि वह टुकड़ा उसी आकार में रहे, तो वह उस टुकड़े को पूरी तरह से पानी के अन्दर डुबो देता है. बपतिस्मे के द्वारा एक व्यक्ति प्रतीकात्मक रूप से यह दिखाता है कि उसने मसीह की मृत्यु, दफ़न होने और जी उठने को स्वीकार कर लिया है. बपतिस्मा आन्तरिक दशा को भी दिखाता है कि वह व्यक्ति पापों के लिये मर गया है, उसने अपना पापी जीवन पानी में दफ़न कर दिया है, उसने अपने पापों को यीशु के ऊपर डाल दिया है कि मसीह उसके पापों का प्रायश्चित कर सके- और वह एक नये जीवन के साथ जी उठा है.

यहाँ पर धर्मशास्त्र का एक वचन है जो बपतिस्मे के बारे में यह बताता है: ***''क्या तुम नहीं जानते की हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया है तो हमने उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया. अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की चाल चलें.''*** (रोमियों 6:3-4).

ये पद हमें साफ-साफ बताते हैं कि जिस व्यक्ति ने बपतिस्मा लिया है वह पानी में दफ़न हुआ है और वह

मसीह में एक नये जीवन के साथ पुन: जी उठा है. एक नवजात् शिशु के बपतिस्मे में ऐसा नहीं होता है. बाइबल बपतिस्मे को, ''एक अच्छे विवेक का परमेश्वर को प्रतिउत्तर'' बताती है और इसे ऐसे पढ़ते

हैं: ***''उसी जल का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है. इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है.''*** (1 पतरस 3:21).

अगर हमें किसी के साथ समझौता करना है, या किसी समझौते पर हस्ताक्षर करने हैं, तो हमें यह जानना ज़रूरी है कि हम किस चीज़ पर हस्ताक्षर कर रहें हैं, और इसके नियम और शर्तें कौन सी हैं. बपतिस्मे के विषय में भी ऐसा ही है. बपतिस्मे से पहले, यह ज़रूरी है कि हम अपना अधिक से अधिक समय धर्मशास्त्र पढ़ने में और प्रार्थना करने में बितायें ताकि सहमति और वाचा की शर्तों के विषय में हमें पूरी जानकारी हो सके. यही कारण है कि हम इसे ''विश्वास का बपतिस्मा'' या ''वयस्क बपतिस्मा'' कहते हैं. बपतिस्मे से पहले हमें अच्छी तरह से सोच-विचार करके निर्णय लेना चाहिए, एक ऐसा निर्णय कि परमेश्वर हमें बदले और प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें जीवन भर यीशु के पीछे चलने की शक्ति प्राप्त हो जाए. (1 पतरस 2:21). बपतिस्मा एक अंदरूनी बदलाव का जो पहले शुरू हो चुका है एक बाहरी चिन्ह है.

'कनफर्मेशन' की परम्परा रोमन कैथोलिक कलीसिया ने 13वीं शताब्दी में आरम्भ की थी. सच्चाई यह है, कि जो लोग कनफरर्मेशन में भाग लेते हैं उनमें से बहुत थोड़े लोग ही यीशु मसीह में व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं. यह दिखाता है कि यह परम्परा अपने उद्देश्यों को पूरा नहीं करती है. मार्टिन लूथर ने अपने समय में कनफर्मेशन को नकार दिया था और उसे एक नया नाम दिया जैसे कि आज इसे ''सौवें बन्दर का प्रभाव'' कहा जाता है. लूथर ने इसे एक धोखे के रूप में देखा. उसका मतलब था कि ये सब एक दूसरे का बन्दरों के समान अनुकरण करते और एक दूसरे के सामने वे वादे करते हैं जिन्हें जीवन में शायद ही कोई निभाना चाहता है. लूथर ने कनफर्मेशन को नकार दिया था जो नार्वे में 1736 तक शुरू नहीं हुआ.

नवजात् शिशुओं का बपतिस्मा और कनफर्मेशन लोगोंद्व ाराब नाईग ईप रम्पराएँह ैं.व ेब इबलके बपतिस्मे का स्थान लेने वाली परम्पराएँ हैं. शैतान ऐसे ही काम करता है. वह धर्मशास्त्र की सच्चाई के स्थान पर एक नकली परम्परा को लागू करता है जो असली केस मार्ना दखाईत ोद ेतीह ैप रन्तुह ोतीा बल्कुल अलग है.

धर्मशास्त्र कहता है कि: ***''एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है, एक ही बपतिस्मा है.''*** (इफिसियों 4:5). हम पहले ही देख चुके हैं कि सच्चा बपतिस्मा नवजात् शिशु का बपतिस्मा/पानी के छींटे देना नहीं है. लेकिन यह तो विश्वास का बपतिस्मा है, जहाँ पर व्यक्ति सुसमाचार को सुनता है, और अपना फैसला स्वयं करते हुए यीशु मसीह से प्राप्त होने वाला उद्धार

स्वीकार करता है और फिर बपतिस्मा लेकर यीशु मसीह के उदाहरण का अनुसरण करता है. यीशु मसीह का बपतिस्मा उसकी जवानी के दिनों में 30 वर्ष की आयु में यरदन नदी में हुआ था. यीशु को

बपतिस्मा लेना कोई ज़रूरी नहीं थी क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया था और इसलिए उसे उद्धार की ज़रूरत भी नहीं थी. फिर भी उसने बपतिस्मा लेकर हमें एक आदर्श दिया है (मत्ती 3:13-17) ताकि हम उसके पद चिन्हों पर चल सकें. (1 पतरस 2:21).

हमने पढ़ा है कि बपतिस्में में किस तरह से व्यक्ति पानी के अन्दर गाड़ा जाता है और यीशु मसीह में एक नए जीवन के साथ जी उठता है. आइए हम रोमन कैथोलिक कलीसिया और धर्मभ्रष्ट प्रोटेस्टेन्ट्स की परम्पराओं को छोड़कर धर्मशास्त्र के बपतिस्मे का पालन करें. बच्चों का बपतिस्मा और कनफर्मेशन कैथोलिक कलीसिया द्वारा बनाई हुई परम्पराएं हैं, और जो लोग यह विश्वास करते हैं कि वे इसलिए बचाये जाएँगे क्योंकि उनके माता पिता ने उनके बदले में विश्वास किया है, वे बड़े धोख़े में हैं. उन्होंने धर्मशास्त्र के बपतिस्में का अनुभव नहीं किया है, और इसके अलावा कोई दूसरा ऐसा बपतिस्मा नहीं है जिसे बाइबल मान्यता प्रदान करती हो. वे सब जो मसीह का अनुसरण करेंगे और वैसा ही करेंगे जैसा मसीह ने किया तो वे धर्मशास्त्र के बपतिस्मे को ही स्वीकार करेंगे. इस प्रकार के बपतिस्में में माता-पिता अपने बच्चों के बदले में विश्वास करते हैं, लेकिन बपतिस्मा तो उसी का होना चाहिए जो स्वयं विश्वास करता है. यीशु ने नीकुमदेमुस से कहा था,

''कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता.'' (यूहन्ना 3:5).

यीशु कहता है कि जब तक हम जल और आत्मा से बपतिस्मा न लें, तब

तक हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते. यह हम सब के लिए आँखें खोलने वाली सच्चाई चाहिए!

इसलिए आइये हम यीशु के बपतिस्मे, विश्वास के बपतिस्मे में हिस्सा लें! नवजात् शिशुओं को बपतिस्मा/पानी के छींटे देने का बपतिस्मा, कोई बपतिस्मा नहीं हैं. यह तो लोगों द्वारा बनाई गई परम्परा और सिर्फ एक धोखा है!

9. कैथोलिक कलीसिया कहती है कि उद्धार पाने के लिए कलीसिया की परम्पराओं का पालन करना ज़रूरी है,जैसे कि बपतिस्मा लेना, परमप्रसाद में हिस्सा लेना, प्रायश्चित करना, आदि. लूथर को भी ये सारी चीजें उस समय सिखाई गईं थीं जब वह एक कैथोलिक के रूप में बढ़ रहा था. एक दिन जब वह पिलातुस की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, उसे बाइबल का यह वचन याद आया: ***''धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा.''*** (रोमियों 1:17). लूथर अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उसे ऐहसास हुआ कि वह उद्धार पाने के लिए अपने घुटनों पर रेंग रहा था क्योंकि उसने सोचा था कि उसके कर्म उसे बचा लेंगे. उसी वक्तउसके दिमाग में एक नई रोशनी चमकी. उसे समझ में आ गया की सिर्फ यीशु में विश्वास ही, जगत के उद्धारकर्ता में विश्वास ही उसे बचा सकता था, परन्तु हमारे कर्म तो हमारे विश्वास के परिणामस्वरूप प्रकट किए जाएंगे. (मत्ती 5:8). जब लूथर ने इस विषय में अध्ययन जारी रखा उसे परमेश्वर के वचन में और भी बहुत सारे ऐसे महत्वपूर्ण सूत्र मिले जो यीशु में विश्वास रखने के द्वारा धर्मी ठहरने के बारे में बताते हैं. जब हम यीशु मसीह के पास, जैसे हैं वैसे ही अपने सारे पापों के साथ आते हैं, तो हमें अपने पापों को स्वीकार करना और उनके लिए पश्चाताप करके माफी माँगनी चाहिए. यीशु फिर हमारे पापों को क्षमा कर देगा, और उसके अनुग्रह से उसकी धार्मिकता, जिसके हम योग्य नहीं हैं, विश्वास के द्वारा हमारी हो जाएगी. कल्पना कीजिए कि इससे लूथर को कितनी अधिक राहत मिली होगी. जब हम परमेश्वर की योजना का पालन करते हैं तो इस आज़ादी का अनुभव कर सकते हैं.

अब हम विश्वास का वर्णन करने वाली बाइबल की कुछ और आयतों पर मनन करें:

''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है.'' (इब्रानियों 11:1).

''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है. *''(रोमियों 10:17).*

''परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया की उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए. परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में

इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए भेजा की जगत उसके द्वारा उद्धार पाए.''(यूहन्ना 3:16-17).

''परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हम से प्रेम किया है, जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया, (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) और यीशु मसीह में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया. कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए. क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण है. ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे. क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया है.''(इफिसियों 2:4-10).

''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा.''(मरकुस 16:16).

Ì æçÈ¤Ú ã×æÚ ·¤×æ ·¤è €Øæ Öç× ·¤æ ã?

हमने यह पढ़ा है कि *''हम परमेश्वर के बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया है.''*(इफिसियों 1:10).

जब यूहन्ना बपतिस्मादाता सामने आया और उसने प्रचार किया. मन परिवर्तन के बारे में उसने कहा: *''और मन फिराव के योग्य फल लाओ.''*(मत्ती 3:8).

याकूब लिखता है: *''वैसे ही विश्वास भी, यदि वह*

कर्म सहित न हो तो वह मरा हुआ है.''(याकूब 2:17). तो विश्वास कर्म के बिना मरा हुआ है, और अच्छे कर्म विश्वास का फल हैं.

विश्वास के कारण ही हाबिल ने कैन से ज़्यादा अच्छा बलिदान चढ़ाया. विश्वास से ही नूह ने बड़ा जहाज बनाया, विश्वास के ही द्वारा वे लाल समुद्र को पैदल चलकर पार कर गये. विश्वास के द्वारा ही सब ने बहुत कुछ किया. यह विश्वास के द्वारा धार्मिकता है.

जब हम यीशु मसीह की धार्मिकता को स्वीकार कर लेते है, तो हमें यह प्रार्थना भी करनी चाहिए कि हमें एक धार्मिक जीवन जीने की शक्ति भी मिले. तभी हम उसके सच्चे गवाह बन सकेंगे.

''यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो तुम यह भी जानते हो कि प्रत्येक जो धार्मिकता के काम करता है, वह उससे जन्मा है.''(1 यूहन्ना 2:29).

''प्रिय बच्चो किसी के भरमाने में न आना. जो धार्मिकता के काम करता है, वही उसके समान धर्मी है. ''(1 यूहन्ना 3:7).

इस प्रकार हम देखते हैं धार्मिकता का जीवन जीने के लिए और अच्छे फल लाने के लिए यह शक्ति हमारे

अन्दर नहीं है लेकिन यीशु मसीह में पायी जाती है जो विश्वासी के अन्दर निवास करता है. पौलुस घोषणा करता है: ***''वह परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा के कारण तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है.''*** (फिलिप्पियों 2:13).

जब से लूथर ने सामने आकर विश्वास से धार्मिकता का प्रचार किया तब से कैथोलिक कलीसिया और लूथरन कलीसिया के बीच एक संघर्ष बना हुआ है. 1999 में इन दोनों कलीसियाओं ने विश्वास से धार्मिकता विषय पर बहुत चर्चा करके कूटनीति और चर्च एकता की बातचीत के बाद एक संयुक्त दस्तावेज तैयार किया है. इस दस्तावेज़ को ***संयुक्त घोषणा पत्र*** नाम दिया गया है. इस घोषणा पत्र पर 31 अक्टूबर 1999 को ठीक 482 वर्ष बाद जिस दिन लूथर ने विट्टनबर्ग के चर्च के दरवाज़े पर अपने सिद्धान्त ठोंके थे और यह घोषणा भी की थी कि धार्मिकता केवल और केवल विश्वास से ही संभव है, ठीक उसी दिन हस्ताक्षर किये गये. यह संयुक्त घोषणा पत्र जो यह घोषणा करता है कि उद्धार कर्मों से संभव है इसने एक बार फिर लूथरन कलीसिया और रोमन कैथोलिक कलीसियाओं को एक कर दिया है.

â×Â‡ÂÅSÅ‹ÅâÙç·¤Ø¤ãÚ¤×ÙÙãè

अब हम विट्टनबर्ग के 500 साल बाद देखते हैं कि, कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट्स दोनों मिलकर एकता का उत्सव मनाते हैं. उन्होंने लूथर के रोम से इतने बड़े अलगाव को बहुत छोटा समझा है और कहते हैं कि अब हम एक नए युग में हैं, हम एक साथ खड़े होकर दुनिया में शान्ति स्थापित करने के लिए काम करेंगे. लेकिन यह शांति हमें चर्च एकता कार्यक्रम, कूटनीति और बहुमत के द्वारा मिलेगी. यीशु ने कहा: ***''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, मैं अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ, जैसे संसार देता है, वैसे मैं तुम्हें नहीं देता, तुम्हारा मन न घबराए और न डरे.''*** (यूहन्ना 14:27).

सच्ची शान्ति तब प्राप्त होती है, जब हम यीशु को हमारे

जीवन में ग्रहण कर लेते हैं, जब हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं और अपने पापों के लिए माफी माँगते हैं, तब विश्वासी को मसीह के अनुग्रह से सच्ची शान्ति मिलती है. जब यह निर्णय ले लिया जाता है तब विश्वासी को सामर्थ्य के स्रोत के रूप में पवित्र आत्मा प्राप्त होता है जो यीशु के पद चिन्हों पर चलने और भले कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है. दुनिया हमें सच्ची शान्ति नहीं दे सकती है. जो लोग परमेश्वर की इच्छा के विपरीत रोमन कैथोलिक कलीसिया की विधियों का पालन करते हैं, उन्हें यह अन्दरूनी शान्ति नहीं मिलेगी, क्योंकि यह शान्ति केवल हमारा यीशु मसीह ही हमें दे सकता है. हमें यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में चुनना होगा. हमें यीशु मसीह की आज्ञा पालन करने का चुनाव करना होगा– तब उसकी शान्ति हमारे

अन्दर प्रवेश करेगी और फिर हम संकरे मार्ग में भी उसके पीछे चल सकेंगे.

धर्म सुधारक यह समझ गये थे कि मसीह से उद्धार पाने का मतलब क्या है. वे सभी बातों को नहीं समझ पाये थे, लेकिन:

- अनाबैपटिस्ट बपतिस्मे का अर्थ समझ गए.
- लूथर ने अनुग्रह के अर्थ को समझ लिया था.
- हस्स ने आज्ञा पालन का अर्थ समझ लिया था.
- वेस्ली ने पवित्रीकरण का महत्व समझ लिया.
- वाल्डनसेस ने बाइबल के महत्व को समझ लिया था.
- मिलर ने यीशु मसीह के दूसरे आगमन का अर्थ समझ लिया था.

हमारा क्या? हमने इनमें से प्रत्येक के विषय में थोड़ा-थोड़ा सीख लिया है, इसलिये हम उनसे अधिक ज्ञान रखते हैं जो हम से पहले हुए हैं. अब हमें तस्वीर का बड़ा रूप देखना चाहिए जिसमें विश्वास, अनुग्रह, मुक्ति, मसीह में जीवन, पवित्रात्मा के कार्य, अनुग्रह में बढ़ना, चरित्र विकास, आत्मा का फल, यीशु का दूसरा आगमन और इसके साथ-साथ निम्नलिखित विषय भी शामिल हों.

10. रोमन कैथोलिक कलीसिया ने परमेश्वर की दस आज्ञाओं को बदल दिया है. दुर्भाग्यवश लूथरन ने भी अपने कैटाकिज़्म में रोमन कैथोलिक कलीसिया की दस आज्ञाओं के संस्करण को ही शामिल किया है. लूथर एक कैथोलिक समाज में एक कैथोलिक के समान ही बढ़ा और पला था और वह रोमन कैथोलिक कलीसिया द्वारा दस आज्ञाओं में किये गये बदलाव को नहीं समझ पाया था.

उन्होंने दस आज्ञाओं में से दूसरी आज्ञा को निकाल दिया है और अपने कैटाकिज़्म में दसवीं आज्ञा को दो भागों में बाँट दिया. इसके अतिरिक्त उन्होंने चौथी आज्ञा में से भी एक मुख्य भाग को निकाल दिया है. दुनिया के इतिहास में यह सबसे बड़ा धोखा है. तौभी बहुत से ऐसे लोग हैं जो यह विश्वास करते हैं, कि रोमन कैथोलिक कलीसिया एक मसीही कलीसिया है. लेकिन एक मसीही को यीशु मसीह के पीछे चलना चाहिए और केवल उसकी आज्ञाओं में ही नहीं परन्तु जो कुछ उसने कहा और लिखा है उसमें से कुछ भी बदलना नहीं चाहिए, जैसा कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ने किया है. इसलिए हम लूथर और दूसरे धर्म सुधारकों के साथ सहमत हैं, जिन्होंने साफ-साफ देखा की पोप का चरित्र मसीह विरोधी का चरित्र है.

मार्टिन लूथर इस बात को इस प्रकार से कहता है:

''मैं ने पहले यह कहा था, कि पोप यीशु मसीह का प्रतिनिधि है, अब मैं दृढ़ता पूर्वक कहता हूँ, कि वह हमारे मसीह का विरोधी और शैतान का प्रेरित है.'' (डी, ॲबीग्रे, किताब 7, अध्याय 6).

जब पोप का आदेश लूथर के पास पहुँचा, उसने कहा: ***''मैं एक अधर्मी और झूठे मनुष्य पोप का तिरस्कार करता और इस पर प्रहार करता हूँ... इसमें स्वयं यीशु मसीह को दोषी ठहराया गया है... मैं सत्य की ख़ातिर ऐसे दोषों को सहते हुए खुशी मनाता हूँ. मैं पहले ही अपने दिल में एक बड़ी आज़ादी का अनुभव कर रहा हूँ; क्योंकि मैं कम***

से कम यह जानता हूँ कि पोप एक मसीही विरोधी है, और उसका सिंहासन स्वयं शैतान का सिंहासन है. ''(डी, ॲबीग्रे, किताब 6, अध्याय 9).

आज कितने लूथरन विश्वासी यह कह सकते हैं? यदि दूसरे तरीके से पूछा जाए: क्या लूथरन कलीसिया रविवार विश्राम को स्वीकार करने के कारण स्वयं भी कुछ हद तक मसीह विरोधी नहीं है? जैसा कि पहले ही देखा गया है, कि पोप ने चौथी आज्ञा में से एक बहुत बड़ा हिस्सा निकाल दिया है.

¿æÍè¥æ™æ§âÂ·¤æÚ·¤ãÌèãÑ

''तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना, छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना, परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्राम दिन है. उसमें न तो तू किसी भाँति का काम-काज करना और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हों. क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया, इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया. ''(निर्गमन 20:8-11).

कैटाकिज़्म में चौथी आज्ञा में ऐसा कुछ भी कहीं नहीं छोड़ा गया है जिससे यह आभास हो सके कि सप्ताह का सातवाँ दिन ही यहोवा का विश्राम का दिन है. अधिकाँश लोग यह भली प्रकार जानते हैं कि यीशु मसीह शुक्रवार को मारा गया. धर्मशास्त्र इस दिन को 'तैयारी का दिन' बताता है, जो सब्बत दिन से एक दिन पहले आता है. (मरकुस 15: 42-43). तैयारी के दिन के बाद के दिन को सब्बत का दिन कहते हैं. यह धर्मशास्त्र के अनुसार सातवाँ दिन और सप्ताह का अन्तिम दिन होता है. जैसे यीशु ने कब्र में आराम किया, उनके चेले भी इकट्ठा हुए और सभी ने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया. (लूका 23:53-56). अगला दिन रविवार का दिन था. बाइबल के अनुसार रविवार सप्ताह का पहला दिन है. इस दिन यीशु मसीह पुनः जी उठे थे. (मरकुस 15:42-47,16:1-6).

वे सब जो इन पदों को पढ़ते हैं वे साफ-साफ देख

सकते हैं कि रविवार सप्ताह का पहला दिन है जबकि धर्मशास्त्र की शिक्षा के अनुसार सब्बत का दिन सप्ताह का सातवाँ दिन है. सब्बत का दिन ही बाइबल के अनुसार विश्राम का दिन है. सभी मसीहियों को यीशु के दिन का पालन करना चाहिए क्योंकि यह यीशु ही है जिसने सातवें दिन को विश्राम दिन के रूप में स्थापित किया था. धर्मशास्त्र कहता है: ***''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ.''*** (यूहन्ना 1:1-14). धर्मशास्त्र यह भी कहता है: ***''इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्बत के दिन का भी स्वामी है.''*** (मरकुस 2:27-28). यह वचन हमें यह बताता है कि सब्बत का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है. बहुत से लोग यह विश्वास करते हैं कि सब्बत का दिन केवल यहूदियों के लिए बनाया गया है, जैसा कि एक्यूमेनीकल बाइबल- 2011 के 'फुटनोट' टिप्पणी मेंभ ीि दखायाग याह ै.ल ेकिनय हस त्यन हींह ै, क्योंकि सब्बत का दिन तो सृष्टि की रचना के समय से ही स्थापित किया गया था. हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने छ: दिन में सृष्टि की रचना की और सातवें दिन विश्राम किया था. इस प्रकार हम देख सकते हैं कि सब्बत के दिन का आरम्भ सृष्टि रचना के समय हुआ था, मसीह के जी उठने के दिन नहीं. मसीह का पुनरुत्थान दिवस सप्ताह का पहला कार्य दिवस है, जबकि मसीह ने सातवें दिन अपनी कब्र में विश्राम किया था. ऐसा नहीं है कि यीशु मसीह ने सप्ताह के सातवें दिन और सप्ताह के पहले दिन-दो दिन विश्राम किया हो. नहीं, यीशु ने सब्बत के दिन कब्र में विश्राम किया और नए कार्य दिवस में रविवार के दिन जी उठे जो सप्ताह का पहला दिन था, जैसे कि यीशु ने सृष्टि रचना के समय भी सप्ताह के पहले दिन कार्य (सृष्टि रचना) किया था. बाइबल में ऐसा कहीं नहीं आया है कि यीशु ने हमें सातवाँ दिन पवित्र न मानने का आदेश दिया हो और सातवें दिन के स्थान पर सप्ताह के पहले दिन को स्थापित कर दिया हो. यदि उसने यह बदलाव किया होता तो उसने इसे बिल्कुल साफ-साफ बताया होता. मसीह को दस आज्ञाएँ भी बदलनी पड़तीं क्योंकि यहाँ साफ-साफ लिखा है कि हमें सप्ताह के सातवें दिन को पवित्र मानना है. और आगे जैसा कि बाइबल बताती है कि परमेश्वर कभी नहीं बदलता है:

''यीशु मसीह कल, आज और युगानुयुग एक सा है.'' (इब्रानियों 13:8).
''मैं यहोवा बदलता नहीं,'' (मलाकी 3:6).
''घास तो सूख जाती और फूल मुर्झा जाता है, परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा.'' (यशायाह 40:8).

कैथोलिक कलीसिया जोर-शोर से यह दावा करती है कि उसने विश्राम के दिन को बदला है। रोमन कैथोलिक कैटाकिज़्म में हम इस प्रकार से पढ़ते हैं:

प्रश्न: कौन सा दिन सब्बत का दिन है?

उत्तर: शनिवार का दिन सब्बत का दिन है.

प्रश्न: हम शनिवार की जगह रविवार को विश्राम दिन क्यों मानते हैं?

उत्तर: हम शनिवार की जगह रविवार को विश्राम दिन इसलिए मानते हैं, क्योंकि लौदीकिया (336 ईसवी)क ेस भाम ेकै थोलिकक लीसियान े शनिवार की पवित्रता को रविवार में बदल दिया.

प्रश्न: क्या आपके पास यह साबित करने के लिए कोई और भी रास्ता है कि कलीसिया (रोमन कैथोलिक) के पास त्यौहारों और दिनों को स्थापित करने का अधिकार है?

उत्तर: अगर उसके पास इसका अधिकार नहीं होता वह वो ऐसा कार्य नहीं करती जिससे सभी

आधुनिक धर्म सहमत हैं. वह सप्ताह के पहले दिन रविवार को सप्ताह के सातवें सब्बत दिन की मान्यता प्रदान न करती, जिसके बदलाव के विषय में बाइबल में कोई अधिकार नहीं दिया गया है.

स्रोत: ''डॉक्ट्रिनल कैटाकिज़्म, पृष्ठ 174, और द कन्वर्ट कैटाकिज़्म ऑफ कैथोलिक डॉक्ट्रिन, 1977, पृष्ठ 50.''

यह देखना रुचिकर है कि रविवार का अर्थ, ***''सूर्य का दिन'' है*** न कि ***''परमेश्वर के पुत्र का दिन''.*** राजा कॉन्सटेन्टाइन वह पहला व्यक्ति था, जिसने सबसे पहले रविवार को विश्राम दिन घोषित करने के लिए 321 ईस्वी में राजकीय कानून बनाया था. ***''सारे न्यायाधीश और शहरों के लोग, और सब प्रकार का व्यापार करने वाले लोग सूर्य के दिन के सम्मान में आराम करें, लेकिन वे लोग जो गाँवों में बसे हैं, वे आज़ादी और पूरे अधिकार के साथ खेती बाड़ी का काम कर सकते हैं.''*** (हिस्ट्री ऑव द क्रिश्चियन चर्च, 5वाँ सं., किताब 3, पृष्ठ 380).
हम फिर दोहराते हैं कि रविवार का मतलब सूर्य का दिन है, परमेश्वर के पुत्र का दिन नहीं.

ßâèØÌ ×ÕÎÜæß

यह बात भली प्रकार से स्पष्ट है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ने वसीयतनामा और विधान में बदलाव किया है. वसीयतनामा या विधान उस समय लिखा जाता है जब कि व्यक्ति जीवित होता है. जब व्यक्ति मर जाता है, तो वह वसीयतनामा मान्य होता है, और उस वसीयतनामा के कथन को कोई बदल नहीं सकता है. यदि कोई जन किसी वसीयतनामे में किसी प्रकार की फेर बदल करता है तो यह जालसाज़ी कहलाएगी. बिल्कुल ऐसा ही काम रोमन कैथोलिक कलीसिया ने किया है. क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह की मृत्यु के बाद उसकी दस आज्ञाओं और उसके सब्बत दिन की आज्ञा में बदलाव करने का पाप किया है. हम देखते हैं कि उन्होंने यह बदलाव यीशु की मृत्यु के 300 वर्ष बाद किया था. वसीयत के इतिहास में शायद यह सबसे बड़ी जालसाज़ी की गयी है और यह पाप स्वर्गीय पुस्तकों में लिखा गया है.

इस जालसाज़ी का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है. इस जालसाज़ी के कारण करोड़ों लोगों ने धोखा खाया है. हमें उन लोगों से हमदर्दी है, क्योंकि उन्होंने पुरोहितों / पादरियों पर यह विश्वास किया था कि वे परमेश्वर के वचन से सत्य की शिक्षा दे रहे थे. परन्तु अब समय आ गया है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया के धोख़े को बे-नकाब किया जाए कि स्त्री-पुरुष रोमन कैथोलिक कलीसिया की बाइबल विरोधी शिक्षाओं में से निकल कर बाहर आ जाएँ.

पोप जॉन पॉल द्वितीय ने अपने प्रेरिताई पत्र, *डाईस डोमिनी में* स्वीकार किया है: ***''यही वजह है कि मसीह के लहू के द्वारा छुटकारे की घोषणा करने वाले जो अपने आप को मसीही कहते हैं, उन्हें लगा कि उनके पास सब्बत दिन के अर्थ को पुनरुत्थान दिवस में बदलने का अधिकार है.*** (डाईस डोमिनी, बिन्दु 63, मई 1998).

उन्होंने यह भी लिखा: ***''परम्पराओं के द्वारा हमें रविवार की आत्मिक और पासबानी आशीषें दी गईं हैं.''***

क्या आपको पोप की घोषणा में कोई कमज़ोरी नजर आती है? पोप खुले आम यह स्वीकार करते हैं कि सब्बत का दिन रविवार में बदल दिया गया है. रोमन कैथोलिक कलीसिया को ऐसा लगा कि विश्राम दिन को रविवार में बदलने का उनके पास पूरा अधिकार है. यहाँ पर वे अपने खुद के अधिकार को बाइबल के अधिकार से ऊपर रखते हैं. उन्हें लगता है कि विश्राम दिन को बदलने का उनके पास अधिकार है!

यदि हम अपने फैसले अपनी भावनाओं के आधार पर लेने लगें तो इसका परिणाम बहुत सारे अद्भुत फैसलों के रूप में सामने होगा.

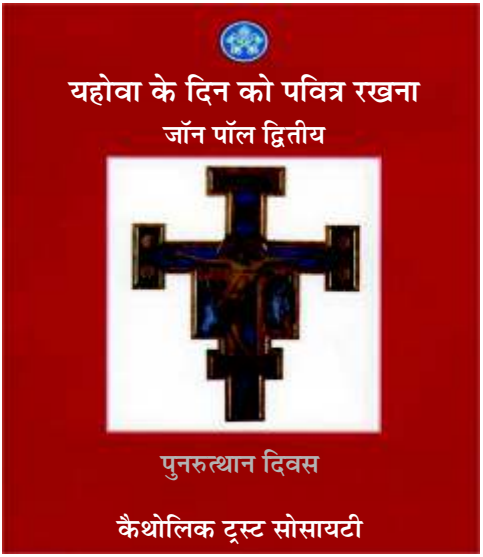

पोप भी स्वीकार करते हैं कि रविवार का विश्राम दिन परम्पराओं के आधार पर स्वीकार किया गया है. दूसरी कलीसियाएँ भी रोमन कैथोलिक कलीसिया के समान ही ईमानदारी से यह क्यों नहीं मान लेतीं कि रविवार का पालन करना परम्पराओं पर आधारित है? रोमन कैथोलिक कलीसिया द्वारा सब्बत के अर्थ को रविवार में बदलना पूरी तरह से ग़लत है-हालाँकि वे मानते हैं कि ऐसा करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है फिर भी उन्होंने ऐसा किया है. न्याय के समय सिर्फ यही नहीं देखा जाएगा कि हमने अपने पापों को स्वीकार किया है कि नहीं, बल्कि यह भी देखा जाएगा कि हम पश्चाताप करके परमेश्वर की विधियों पर चलने के इच्छुक हैं या नहीं.

बुद्धिमान सुलैमान ने लिखा है: ***''सब कुछ सुना गया, अंत की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर, क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है. क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का चाहे वे भलीह ोंय ाब ुरी,= यायक रेगा.''*** (सभोपदेशक 12:13-14).

आइये हम रोमन कैथोलिक कलीसिया के स्रोतों से कुछ संदर्भों को देखते हैं:

''प्रोटेस्टेन्ट्स लोगों के पैदा होने से हज़ारों वर्ष पहले (रोमन) कैथोलिक कलीसिया ने अपने स्वर्गीय मिशन के अधिकार से आराधना और विश्राम के दिन को शनिवार से रविवार में बदल दिया.'' (कैथोलिक मिरर, सितम्बर, 1893).

''रविवार हमारे अधिकार का चिन्ह है. कलीसिया धर्मशास्त्र से ऊपर है, और सब्बत (रविवार) पालन का यह बदलाव इस सच्चाई का सबूत है. (कैथोलिक रिकॉर्ड, लन्दन/ओनटारियो, सितम्बर 1, 1923).

यहाँ हम फिर से देखते हैं, कि कैथोलिक कलीसिया यह स्वीकार करती है कि वह धर्मशास्त्र से ऊपर है. वे कहते हैं कि समय और व्यवस्था को बदलने का उनके पास स्वर्गीय अधिकार है.'' (दानिय्येल 7:25). वे ऐसेअ धिकारोंक ाद ावाक रतेह ैंज ोप रमेश्वरके वचन के विपरीत हैं.

जब शैतान के द्वारा यीशु की परीक्षा की गई, यीशु ने शैतान के सामने परमेश्वर के वचन को प्रस्तुत किया. मसीह ने कहा, ***''यह लिखा है.''*** (मत्ती 4:10). यीशु ने अपना अधिकार पवित्रशास्त्र से प्राप्त किया. जो लोग परमेश्वर के वचन के अधिकार को स्वीकार नहीं करते, उनके पास कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि अधिकार सिर्फ परमेश्वर के वचन से ही प्राप्त होता है.

…Üç - ¤Ù€Ø¤ ¿Ü¤ÙçßŸ¤¤×çÎÙ - ¤¤ÕÎÜ¤?

कुछ लोग कहते हैं कि चेलों ने यीशु मसीह के जी उठने की याद में शनिवार की जगह रविवार को विश्रामदिन मानना आरम्भ कर दिया था. ऐसे बदलाव के विषय में धर्मशास्त्र पूरी तरह से चुप है. रविवार सप्ताह के पहले दिन के विषय में बाइबल में पाये जाने वाले आठ वचनों से, विश्वासियों द्वारा शनिवार सप्ताह के सातवें दिन के स्थान पर रविवार सप्ताह के पहले दिन को विश्राम दिन के रूप में पालन करने केविषय में कोई आज्ञा या कोई भी संकेत नहीं मिलता है. (मत्ती 28:1; मरकुस 16:2, 9; लूका 24:1; यूहन्ना 20:1,19; प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2).

इसके विपरीत, प्रेरितों के काम में हम यह पाते हैं कि चेले सब्बत दिन का उसी रीति से पालन करते रहे जैसा कि यीशु मसीह ने उन्हें सिखाया था. (प्रेरितों के काम 13:14-15,13:42-44, 16:12-13,17:1-2,18:3-4).

Å‹Å - ¤è âÖ¤

रोमन कैथोलिक कलीसिया की सबसे ज़्यादा अधिकार संपन्न सभा ट्रेन्ट की सभा थी. (1545-63). इसका मुख्य उद्देश्य, ***''प्रोटेस्टेन्ट्स की नास्तिकता के जबाव में निर्णायक निश्चय के साथ कलीसिया के सिद्धान्तों को प्रस्तुत करना था.''***-कैथोलिक एन्साइक्लोपीडिया, किताब 15, द काउंसिल ऑफ ट्रेन्ट.''

इसक लीसियाईस भाम ेंब इबलअ ाधारितब नाम पम्पराओं पर निर्भर अधिकार के ऊपर बहुत भारी वाद-विवाद हुआ. यह देखना रोचक है कि अन्त में निर्णय बाइबल के बजाए परम्पराओं के पक्ष में केवल इसलिये गया क्योंकि कलीसिया परम्पराओं के आधार पर पहले ही आराधना के दिन को शनिवार से रविवार में बदल चुकी थी. वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह बदलाव इस बात का प्रमाण है कि कलीसिया के पास बाइबल से भी ऊँचा और बड़ा अधिकार है. उनका निष्कर्ष इन शब्दों में दिया गया है: ***''आखिर में ...सारे संकोच को एक ओर रखकर .... रेग्गईयों के आर्चबिशप ने एक भाषण तैयार किया जिसमें उन्होंने खुले आम घोषित किया कि परम्पराएँ बाइबल के ऊपर हैं. इसलिए कलीसिया के अधिकार को वचन के अधिकार द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि कलीसिया ने मसीह की आज्ञा से नहीं बल्कि अपने ही अधिकार से ख़तने को बपतिस्मे में और सब्बत को रविवार में बदल दिया है.''*** (जे. एच. हॉल्टमैन, *कैनन एण्ड ट्रेडिशन,* लुडविग्सबर्ग, जर्मनी में 1859 में प्रकाशित, पृष्ठ 263).

अब हम विषय के मुख्य भाग तक आ गए हैं. प्रोटेस्टेन्ट्स और धर्म सुधारकों ने कहा है और आज भी कहते हैं कि उनके विश्वास और शिक्षाओं का आधार केवल और केवल पवित्रशास्त्र ही होगा. लेकिन रोमन कैथोलिक कलीसिया का प्रोटेस्टेन्ट्स से विरोध है: नहीं, प्रोटेस्टेन्ट्स के पास केवल पवित्रशास्त्र से अधिकार नहीं है क्योंकि वे लोग भी धर्मशास्त्र के सप्ताह के पहले दिन रविवार को विश्राम का दिन मानते हैं, जबकि धर्मशास्त्र कहता है कि हमें सातवें दिन शनिवार को विश्राम का दिन मानना चाहिए. इस विषय में हमें रोमन कैथोलिक लोगों के साथ सहमत होना पड़ेगा. वे ईमानदारी से स्वीकार करते हैं कि उन्होंने शनिवार सातवें दिन को रविवार सप्ताह के पहले दिन में बदल दिया है. जबकि उसी समय में वे प्रोटेस्टेन्ट्स और धर्म-सुधारकों की आलोचना इसलिए करते हैं क्योंकि वे दावा तो केवल धर्मशास्त्र पर चलने का करते हैं, लेकिन हकीकत में वे ऐसा करते नहीं हैं क्योंकि वे रोमन कैथोलिक कलीसिया की परम्पराओं पर चलते हुए सप्ताह के पहले दिन को विश्राम का दिन मानते हैं.

''अब प्रोटेस्टेन्टस् के लिए केवल एक शरण स्थल बचा है कि अब वे 'केवल और केवल लिखित वचन' को मानने का निर्णय करें. प्रोटेस्टेन्ट्स लोगों के लिए अपना सम्मान बचाने के लिए अभी भी अधिक देर नहीं हुई है. क्या प्रोटेस्टेन्ट्स लोग अपने विश्वास के लिए दृढ़ता से खड़े होने का साहस करेंगे? या वे अभी भी प्रोटेस्टेन्ट्स लोगों के विश्वास को मानने की घोषणा करते हुए, कैथोलिक कलीसिया द्वारा स्थापित असुरक्षित और स्वयं में विरोधाभासी और आत्मघाती शिक्षा को थामें रहेंगे. क्या वे रोमन कैथोलिक कलीसिया की परम्पराओं द्वारा स्थापित रविवार को विश्राम दिन मानते रहेंगे? (कैथोलिक मिरर, सितम्बर 2, 9, 16 और 23, 1893 *रोमस् चैलेन्ज* नामक ट्रैक्टस).

ŒØæÚ Îæ S Ì æ, §â çßáØ × ¥æÂ ç·¤â ·¤Âÿæ × ¹ Ç ãæ» ?

मार्टिन लूथर ने कैथोलिक कलीसिया का विरोध किया और उसकी आलोचना करने की हिम्मत की, और बाद में उसने रोमन कैथोलिक कलीसिया को छोड़ भी दिया. परमेश्वर की व्यवस्था-विशेष रूप से सब्बत दिन के बदले जाने के बारे में लूथर को स्पष्ट समझ नहीं थी. जिन लोगों ने लूथर के धर्मसुधार कार्य को आगे बढ़ाया वे लूथर से भी आगे निकल सकते हैं, किन्तु दुर्भाग्य से वे फिर से रोम से गले मिलने के लिए वापस लौट गये हैं.

प्रोटेस्टेन्ट्स् लोग विश्राम दिन के विषय में ग़लत राह पर चल रहे हैं. रोमन कैथोलिक कलीसिया की परम्पराओं को अपनाने के कारण ही वे केवल और केवल बाइबल का पालन करने के अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाए हैं. धर्मपतन के कारण प्रोटेस्टेन्ट्स् लोग धीरे-धीरे फिर रोमन कैथोलिक कलीसिया की ओर वापस जा रहे हैं. **जब वे 2017 में लूथर के रोम से अलग होने और धर्मसुधार की 500वीं वर्षगांठ मनाऐंगे तब साथ-साथ चलने के इस समझौते पर पर्व मनाया जाएगा.** इस भावना से एकता हो सकती है कि (कुछ अपवादों को छोड़कर) अब कोई प्रोटेस्टेन्ट्स् नहीं है, और जो आज के प्रोटेस्टेन्ट्स् हैं वे भी कैथोलिक कलीसिया के समान बाइबल और परम्पराओं का पालन करते हैं.

आइए अब हम कुछ बाइबल विरोधी महत्वपूर्ण परम्पराओं को देखते हैं, जिन्हें लूथरन तथा अन्य प्रोटेस्टेन्ट्स कलीसियाओं ने भी स्वीकार कर लिया है:

1. लूथरन कलीसिया के सदस्य रोमन कैथोलिक कलीसिया की परम्पराओं को मानते हुए रविवार को विश्राम दिन मानते हैं जिस बात के लिए बाइबल में कोई आधार नहीं पाया जाता है. वे बाइबल के सातवें दिन का पालन करने के बजाए सप्ताह के पहले दिन का पालन करते हैं.

2. लूथरन कलीसियाएं नवजात शिशुओं को बपतिस्मा देने की परम्परा का अनुसरण करती हैं, जबकि विश्वास के बपतिस्में के स्थान पर बच्चों को छींटे का बपतिस्मा देने के पक्ष में धर्मशास्त्र में कोई संदर्भ नहीं पाया जाता है.

3. लूथरन कलीसिया के सदस्य कंफर्मेशन की परम्परा का पालन करते हैं, जहाँ 13-14 साल की उम्र के जवान बालकों को अब विश्वास का दृढ़ीकरण (कंफर्मेशन) दिया जाता है क्योंकि जब वे नवजात ही थे उनके अपने विश्वास के बिना उन्हें ''बपतिस्मा'' दिया गया था.

जो लोग दूसरों को धोखा देते हैं उनके लिए यीशु ने ऐसी कौन सी कठोर और गंभीर चेतावनी दी है? यीशु ने कहा: ***''पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर***

विश्वास करते हैं, एक जन को भी पाप करने के लिए उकसाता है, उसके लिए यह अच्छा होता कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबाया जाता. ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का लगना अवश्य है, पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है.''(मत्ती 18:6-7).

çÙc · ¤á

धार्मिक सुधार लम्बे समय तक नहीं चल पाया क्योंकि बाइबल और केवल बाइबल का पालन नहीं किया गया. इस बात का स्पष्ट प्रमाण इस बात से मिल जाता है कि धर्म-सुधारक और प्रोटेस्टेन्ट्स् लोग अभी भी रविवार को ही विश्राम दिन मानते हैं!

बहुतस`ल ोगक हतेह ैंि कध र्म-सुधार का काम लूथर के साथ ही समाप्त हो गया, लेकिन इसे तो लगातार अन्तिम समय तक चलते रहना चाहिये. लूथर के पास उसको परमेश्वर की ओर से मिले प्रकाश को लोगों तक पहुँचाने का एक बहुत बड़ा कार्य था. लेकिन उसे वह संपूर्ण प्रकाश नहीं मिल सका जो संसार को मिलना था. उसके समय से अब तक वचन से नया प्रकाश और नई सच्चाईयों प्रकट हो रही हैं.

धर्म-सुधारकों के धर्मशास्त्र सबंधित विश्वास को क्या हो गया है? आज हमें वास्तव में सच्चे धर्मसुधारकों की बल्कि बहुत से धर्मसुधारकों की ज़रूरत है. अनेक कलीसियाओं में पाई जाने वाली झूठी शिक्षाओं की हक़ीकत लोगों को पता होनी चाहिए. और उसी के साथ लोगों को बाइबल का स्पष्ट और सच्चा संदेश जैसा कि प्रकाशितवाक्य 14:6-12 और 18:4 में पाया जाता है उसे सुनने की भी ज़रूरत है. परमेश्वर के कार्य के लिए लूथर के समान कौन बहादुरी से खड़ा होगा?

आज ऐसा लग रहा है कि दुनिया की सारी भ्रष्ट शक्तियाँ युद्ध जीत जाऐंगी. लेकिन धर्मशास्त्र यह प्रकट करता है कि ये शक्तियाँ यीशु से और जो उसके साथ हैं उनसे युद्ध करेंगी. (प्रकाशितवाक्य 17:12-14). यह हमें यही दिखाता है कि परमेश्वर ही है जिसके हाथ में नियंत्रण है और वही है जो सीमाओं को तय करता है. जो लोग उसके पक्ष में हैं वे ही हैं जो अन्त समय तक चलने वाले धर्मसुधार के महान युद्ध में जीतेंगे!

âÕâ ÕÇè ¥æç¹ Úè ÂÚèÿææ

धर्मशास्त्र बताता है कि आख़िरी बड़ी परीक्षा परमेश्वर की आराधना के विषय पर होगी और यह परीक्षा इस दुनिया के उद्धारकर्ता यीशु मसीह के वापस आने के ठीक पहले होगी. धर्मशास्त्र इस परीक्षा की व्याख्या इस प्रकार करता है, ***''उसे उस पशु की मूर्ति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया ताकि पशु की मूर्ति बोलने लगे. जितने लोग उस पशु की मूर्ति की पूजा न करें वह उन्हें मरवा डालें. उसने छोटे-बड़े, धनी-दरिद्र, स्वतंत्र-दास सब के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक एक छाप लगा दी. ताकि उस व्यक्ति को छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम***

या उसके नाम का अंक हों, और कोई लेने-देन न कर सके. ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है. उसका अंक छः सौ छियासठ (666) है.'' (प्रकाशितवाक्य 13:15-18).

तो यह परीक्षा इस आधार पर होगी कि हम परमेश्वर की आराधना अपने सृष्टिकर्ता के रूप में करेंगे या ''पशु'' की उपासना करेंगे और उसकी छाप अपने दाहिने हाथ अथवा माथे के ऊपर लेंगे. हम दोहराते हैं: यह परमेश्वर की उपासना का विषय है न कि किसी माइक्रोचिप का. बहुत से लोग यह मानते हैं कि पशु की छाप एक माइक्रोचिप है. इलेट्रोनिक सिस्टम के साथ माइक्रोचिप का प्रयोग उन लोगों को नियंत्रण करने के लिए किया जा सकता है जो पशु की छाप नहीं लेंगे और इसलिए उन्हें ख़रीदने और बेचने का अधिकार भी नहीं मिलेगा. सब प्रकार का रूपया-पैसा बाज़ार में से उठा लिया जाएगा और क्रिय-विक्रय करने के लिये केवल कार्ड का प्रयोग किया जाएगा. माइक्रोचिप या तो कार्ड में डाली जाएगी या फिर उदाहरण के लिए उसे त्वचा के नीचे शरीर के अंदर भी लगाया जा सकता है. कार्ड को बन्द करना कोई समस्या नहीं है. जो लोग उस पशु की छाप नहीं लेंगे उन्हें दण्ड दिया जाएगा क्योंकि वे सांसारिक शक्तियों के प्रति वफादार नहीं हैं. उनकी सज़ा यह होगी कि वे क्रय-विक्रय नहीं कर सकेंगे. पशु की छाप हमारे माथे अथवा हमारे हाथ के ऊपर लेना एक प्रतीकात्मक बात है. माथे का मतलब समझ से है और हाथ का अर्थ हमारे कार्यों से है. (व्यवस्थाविवरण 11:18). हम अपने फैसले और प्रसंद हमारे दिमाग के सामने वाले हिस्से से करते हैं. हम या तो उस पशु की छाप को अपने ऊपर लें या हम अपने कार्यों द्वारा इसका चुनाव करें.

धर्मशास्त्र कहता है कि हमें उसकी उपासना करनी चाहिए जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया हैं. चौथी आज्ञा बताती है कि हमें उस परमेश्वर की- जिसने छः दिन में सृष्टि की रचना की और सातवें दिन विश्राम किया उसी की आराधना करनी चाहिए. क्योंकि विश्राम दिन का संबंध आराधना से है, इसलिए मसीह के आने से पूर्व यह बिन्दु मुख्य रहेगा. हम ऐसे समय में जी रहें हैं जब दुनिया के अगुवे सप्ताह के पहले दिन रविवार को विश्राम दिन, परिवार मिलन और आराधना के रूप में पेश कर रहे हैं. यूरोप में, 'यूरोपियन सण्डे एलायन्स' रविवार को साप्ताहिक विश्राम और परिवार मिलन दिवस बनाने के पक्ष में बहुत अधिक सक्रिय होकर प्रयासरत हैं. अमेरिका में भी 'द क्रिश्चियन कोअलीशन' और 'द लॉर्ड्स डे एलायन्स' और दूसरे बहुत सारे संघटन कार्यरत हैं जो इसी लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रयास कर रहे हैं. रविवार को विश्राम दिन के रूप में प्रस्तुत करना परमेश्वर के वचन और दस आज्ञाओं के विरूद्ध है क्योंकि वे कहते हैं कि हमें उस दिन आराधना करना चाहिए जिसे

परमेश्वर ने आराधना और विश्राम के लिए अलग किया है और बाइबल के अनुसार सप्ताह का सातवाँ दिन है. शीघ्र ही संसार की परीक्षा इस बात पर होगी कि वह क्या उसकी आराधना करेगा जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है और उसके द्वारा निर्धारित दिन पर विश्राम करेगा, या वह ''पशु'' पोप के अधिकार के प्रति वफादारी दिखाते हुए उसकी छाप अपने ऊपर लेगा.

हम पहले कैथोलिक कलीसिया के कुछ वक्तव्य देख चुके हैं जहाँ वे कहते हैं कि उनके पास एक चिन्ह है. वे कहते हैं कि यही चिन्ह उनके अधिकार की छाप है कि उन्हें समय और व्यवस्था को बदलने तथा नई परम्पराएं शुरू करने का अधिकार है क्योंकि उन्होंने विश्राम दिन को भी बदला दिया है. धर्मशास्त्र बताता है कि ठीक ऐसा ही होगा. दानिय्येल की पुस्तक 7:25 में बाइबल कहती है यह कलीसिया समय और व्यवस्था को बदलेगी.

हम देख चुकें है, कि इन लोगों ने विश्राम दिन को सब्बत शनिवार से रविवार में बदल दिया है। अब जब आप इससे अवगत हो चुके हैं, तो आप किसके अधिकार को मानेंगे या किसकी आज्ञा पालन करेंगे?

आपके चुनाव का परिणाम जीवन या मृत्यु होगा क्योंकि अब आप जान चुके हैं कि पतित कलीसिया ने विश्राम दिन के विषय में क्या किया है. बाइबल कहती है,***''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है, और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है.''*** (याकूब 4:17).

जिस परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की उसकी आराधना करने या फिर उस पशु की उपासना करने और उसकी छाप ग्रहण करने का निर्णय ऐसा कार्य है जो भविष्य में होगा. जब ऐसा होगा तब ''पशु की छाप''- पोप के रविवार पालन को कानून द्वारा लागू किया जाएगा.'' (प्रकाशितवाक्य 13:15-16). हमें भी आज ही अपना निर्णय करना चाहिए क्योंकि हमें नहीं मालूम कि कितनी जल्दी हमारा जीवन समाप्त हो सकता है. आज का दिन उद्धार का दिन है,***''यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो.''*** (इब्रानियों 3:7-8).

यदि हम आज अपना फैसला कर लें तो कल मसीह के पीछे चलना आसान होगा!

âæßŠææÙè âÕæ§ÕÜ ·¤§Ù ÂÎæ ÂÚU ŠØæÙ Î Ñ

''यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे.''(यूहन्ना 14:15)
''इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम करते हैं, परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें. (1 यूहन्ना 5:2-3).

''जो कोई यह कहता है, मैं उसे जान गया हूँ, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, तो वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं, पर यदि कोई व्यक्ति उसके वचन पर चले तो उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है. इसी बात से हमें मालूम होता है कि हम उसमें हैं.'' (1 यूहन्ना 2:4-5).

''मेरी भेडें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं.''(यूहन्ना 10:27).

¥ç‹Ì× ¥ÂèÜ

इन धोखों के बारे में लिखते वक्त हम ***रोमन कैथोलिक कलीसिया के सिस्टम*** *के खिलाफ चेतावनी दे रहे हैं, जो कि परमेश्वर के वचन में अनेक बदलाव करने के लिए दोषी है, ऐसा करते समय* <u>*हम कैथोलिक कलीसिया के सदस्यों पर या किसी व्यक्ति*</u>

<u>विशेष पर कोई आरोप नहीं लगाते हैं.</u> हमारी चिन्ता तो रोमन कैथोलिक कलीसिया के तंत्र को लेकर है और हम उसी की तुलना परमेश्वर के वचन से करते हैं.

इसलिए हम आशा करते हैं, कि यह लेख कैथोलिक तथा दूसरे उन लोगों की मदद करेगा जो उचित निष्कर्ष पर पहुँचना चाहते हैं.

हम विश्वास करते हैं कि रोमन कैथोलिक कलीसिया समेतस भीि डनॉमिनेशन्सम ेंस च्चे,इ ंमानदारअ ौर अच्छे लोग पाये जाते हैं. बहुत से लोग दस आज्ञाओं में बदलाव तथा दूसरी झूठी बातों के खिलाफ खड़े होंगे, और उन बन्धनों को तोड़ कर अलग हो जाएँगे जिन्होंने उन्हें ग़लतियों, और कलीसियाओं की परम्पराओं में बाँध रखा है. हम यह भी विश्वास करते हैं कि जो लोग इन कलीसियाओं से बाहर आएँगे वे परमेश्वर के कार्यक ोस माप्तक रनेके ि लएश ाक्तिशालीग वाह साबित होंगे. बाइबल की अपील उन सब लोगों से है जो बेबीलोन (रोमन कैथोलिक और पतित प्रोटेस्टेन्ट्स्) में पाये जाते हैं. ***''उसमें से निकल आओ ताकि तुम उसके पापों में भागी न हो और उसकी कोई विपत्ति तुम पर आ न पड़े.''*** (प्रकाशितवाक्य 18:4).

इस पद के अनुसार यह साफ है कि बेबीलोन (बाबुल) में बहुत सारे मसीह के लोग हैं. क्या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर के अधिकाँश लोग अपने आपको बेबीलोन में पाते हैं? जब वे परमेश्वर के वचन से रोशनी देखेंगे और यह एहसास करेंगे कि उनके साथ धोखा हुआ है, तो मार्टिन लूथर के समान वे लोग परमेश्वर के वचन के अधिकार को मानते हुए बाबुल में से बाहर निकल आयेंगे.

अगर आप ऐसी कलीसिया में पाये जाते हैं जिनमें यहाँ पर बताई गईं बाइबल विरोधी दस बातें सिखाई/प्रचार की जाती हैं, तो आपको अपनी कलीसिया में से बाहर निकल आना चाहिए जिससे आप उस दण्ड से बच जाएँ जो अधर्मियों के ऊपर आने वाला है. (प्रकाशितवाक्य 21:8). एक पैर बेबीलोन में और दूसरा पैर परमेश्वर के पक्ष में रखने से कोई लाभ नहीं होगा. हमें दोनों ही पैरों से पूरी तरह से परमेश्वर के पक्ष में खड़े होना पड़ेगा. यह मत सोचो की आप इसलिए बच जाएँगे क्योंकि आप बहुमत के साथ हैं. बाइबल कहती है कि अन्त समय में अवशेष लोग–जो परमेश्वर के लोग होने का दावा करते हैं, होंगे. बाइबल अवशेष लोगों की पहिचान इन शब्दों में करती है: ***''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं.''*** (प्रकाशितवाक्य 14:12).

...हमारी अपनी शक्ति में तो नहीं लेकिन हमारे जीवन में परमेश्वर की शक्ति के साथ'' (फिलिप्पियों 2:13) आज्ञा पालन करेंगे. अन्त समय में पाये जाने वाले ये परमेश्वर के विश्वास योग्य अवशेष लोग हैं. वे सब एक मन हैं, जैसे कि पेन्तीकुस्त के समय में यीशु के चेले एक मन थे. उनमें मसीह का स्वभाव पाया जाता है. (गलतियों 5:22).

परमेश्वर करे कि हम सब इस अवशेष समूह में पाये जाएँ!

मित्रवत् अभिवादन

एबिल और बेन्टे स्ट्रूक्सनेस

www.endtime.net

अधिक जानकारी एवं अधिक प्रतियाँ प्राप्त करने हेतु:

क्रिश्चयन इन्फॉर्मेशन सर्विस
पोस्ट बॉक्स नम्बर: 75
बरेली–243001, उत्तर प्रदेश

मोबाइल/व्हाटस्अप:

9024126018/9309206425

email:
globalendtime@gmail.com

अथवा नीचे दिये गये पते पर संपर्क करें:

चर्च के द्वार पर दस नये सिद्धान्त! क्या आप तैयार हैं?